प्रगति

श्रह्वखला 3 : अप्रैल – सितम्बर 2017

हिंदी

कक्षा VIII

NOT FOR SALE

SPONSORED BY :

DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

GNCT OF DELHI

शिक्षा निदेशालय

रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

प्रगति

श्रह्खला 3 : अप्रैल – सितम्बर 2017

हिंदी

कक्षा VIII

NOT FOR SALE

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

GNCT OF DELHI
शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

पुनर्वीक्षण :

डॉ. शारदा कुमारी (वरिष्ठ प्रवक्ता)

सुश्री लक्ष्मी पाण्डेय (प्रवक्ता)

मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

परावर्द्धन एवं संपादन समूह :

- श्रीमती निशा जैन, मैंटर शिक्षक

  राजकीय बालिका उच्चतर माधयमिक विद्यालय, झिलमिल कॉलोनी,

  दिल्ली - 110095

- श्रीमती आशा, मैंटर शिक्षक

  राजकीय कन्या वरिष्ठ माधयमिक विद्यालय, गोयला खुर्द, दिल्ली

- सुश्री राधारानी भट्टाचार्य, मैंटर शिक्षक

  जी.जी.एस.एस., बुराड़ी, दिल्ली

- श्रीमती अंजूबाला रोहिल्ला, मैंटर शिक्षक

  राजकीय सहशिक्षा वरिष्ठ माधयमिक विद्यालय, पोसंगीपुर, बी-1, जनकपुरी, नई दिल्ली

- भूषण लाल दत्त, मैंटर शिक्षक, सर्वोदय बाल विद्यालय, रानी गार्डन, दिल्ली
- विपुल, मैंटर शिक्षक, जी.बी. एस.एस, बी सी-ब्लॉक, सुल्तानपुरी, नई दिल्ली

प्रकाशन प्रभारी : सपना यादव

प्रकाशन दल : श्री नवीन कुमार सुश्री राधा और श्री जय भगवान

भूमिका

दिल्ली सरकार ने बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि सभी अधयापक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तकों का बारीकी से अवलोकन एवं अधययन करें और इन कक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में दी गई रचनाओं एवं विषयों को आधार बनाकर सीखने-सिखाने के लिए पूरक सामग्री की रचना करें। इस समूचे अभ्यास का उद्देश्य यह था कि सभी अधयापकों को एक ऐसा साझा धारातल मिले जहाँ वे बच्चों के मौजूदा अधिगम स्तर की समझ के आधार पर अपनी कक्षाओं के बच्चों के लिए अधययन अधयापन की सामग्री मिल-जुलकर तैयार कर सकें।

दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि बच्चों के लिए सरल एवं संदर्भ युक्त पठन सामग्री तैयार करने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस महती उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधाान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा शिक्षा निदेशालय के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अधययन एवं विज्ञान के लगभग 20,000 अधयापकों के लिए मई एवं जून 2016 में कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के सत्रें का संचालन सर्व शिक्षा अभियान के संवुळल संसाधान समन्वयकों के सहयोग से मैंटर शिक्षकों द्वारा किया गया।

इन कार्यशालाओं में अधयापकों ने विषयवस्तु के साथ-साथ कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त तौर-तरीकों पर भी खुलकर चर्चा की। इस प्रकार हिन्दी विषय का अधयापन कर रहे लगभग 4000 अधयापकों (टी.जी.टी हिन्दी) ने अपने विषय के लिए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की। इसके बाद मैंटर शिक्षकों के एक समूह ने कार्यशालाओं में तैयार इस सामग्री का संपादन किया और मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा इस संपादित सामग्री का पुनर्वीक्षण किया गया। इस समूची प्रक्रिया में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को आधार बनाते हुए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की गई।

इस प्रक्रिया एवं सामग्री को 'कार्य में प्रगति' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सामग्री निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आधार देने और उसका संवर्द्धन करने के लिए अतिरिक्त सामग्री है। हम अधयापकों एवं अधयापक शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि बच्चों केसाथ इस सामग्री के निर्वाह एवं अन्त:क्रिया से उपजे अनुभवों को हमारे साथ साझा करें, साथ ही इस प्रकार के प्रयासों में सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अपने सुझाव भी हमे दे आप अपने सुझाव एवं फीडबैक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली के होमपेज पर उपलब्ध फीडबैक प्रपत्र के जरिये ऑनलाइन भी भेज सकते है

संवाद........अपने अधयापक साथियों से

साथियों, आप सभी जानते हैं कि बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात् कर पूर्ण भाषिक क्षमता के साथ विद्यालय की देहरी के भीतर प्रवेश करते हैं। जो बच्चे बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं। आपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की इस

सहजात भाषिक क्षमता का पूरा धयान रखते हुए और परिवार तथा आस-पास केलोगों के साथ अंत: क्रिया से उपजे अनुभवों का समुचित उपयोग करते हुए उन्हें पढ़ने और लिखने की रोमांचक दुनिया में प्रवेश करवाया है। आप इस बात की भरपूर समझ रखते हैं कि आप के पास आने वाले बच्चे भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्व्रतिक आर्थिक ढष्ठभूमि के हैं, उनके पास दुनिया को अपनी ही तरह से देखने के अपने तरीके हैं। वे बड़े सहज भाव से अपनी बात, अपने अनुभव, भावनाएँ, इच्छाएँ व्यक्त कर देते हैं।

आपने पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देते समय इस सहजता को धयान में रखा है। अब आपका समूचा धयान इस बात पर है कि आपके विद्यार्थी जिस सहजता के साथ पढ़ने लिखने की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं, उसी सहजता के साथ वे इन भाषायी कौशलों में निपुणता भी हासिल करें। इस महती कार्य में आपका साथ देने के लिए प्रगति-2 आपके पास है, जिसका अन्तत: उद्देश्य है बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें परिवेशीय सजगता का भाव बनाए रखना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कक्षा छह, सात एवं आठ के लिए तैयार हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों 'वसंत' की रचनाओं को आधाार बनाते हुए 'प्रगति' विद्यार्थियों के लिए भाषायी गतिविधियों का एक विस्तृत ?लक प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी रचनाओं का रसास्वादन अपनी मूल पुस्तक 'वसंत' से करेंगे और उन रचनाओं के पठन से उपजी अनुभूतियों को अपने अनुभवों से जोड़ने व कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के लिए 'प्रगति' की गतिविधायों का आनन्द उठाएँगे। सरस और सरल गतिविधायों का यह व्यापक संसार विविधाता का एक सुंदर ताना-बाना प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को न केवल भाषायी कौशलों में निपुणता प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें बुनियादी मूल्य संरचना औरभविष्य के प्रति दृष्टि निर्माण की राह पहचानने में भी योगदान देगा।

यह वसंत की रचनाओं का प्रवेश द्वार है साथ ही भाषायी कौशलों में समृद्वता प्राप्त करने का सरल रास्ता भी।

प्रगति के साथ अन्त: क्रिया करते समय अगर किसी पल विशेष में आपको ऐसा लगे कि अभ्यास कार्य की बहुलता है तो घभराएँ नहींअभ्यास कार्य की अनिवार्यता अर्जित किए गए कौशलों के संवर्धन के लिए है न कि उन्हें निरुत्साहित करने के लिए। यहाँ पर समय प्रबंधन से जुड़े आपके कौशल बहुत महत्त्वपूर्ण है किसी रचना सन्दर्भ के विशेष में आपको यह महसूस होगा कि उसके लिए दी गई गतिविधियाँ रचना के पठन कौशल का आकलन नहीं कर रहीं तो ऐसा इसलिए किया गया गया है कि आप उस पाठ विशेष को प ाने के बाद विद्यार्थिओ से ही प्रशन बनवाएँ प्रशनो की प्रकति ऐसी हो जो कल्पनाशीलता अनुमान लगाने की क्षमता वर्गीकरण विश्लेषण विवरण अदि प्रस्तुत करने की ामता का विकास करते हो यदि विद्यार्थी ऐसे प्रशन बना पाते है तो समए की वे पाठ के मर्म में पूरी तरह से समझ रहे है बच्चो के प्रति प्रति आपके सरोकार एवं आपकी रचनात्मकता सामग्री का भरपूर लाभ उठाएगी आपके सुझावों की भी अपेक्षा सदैव रहेगी।

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	ध्वनि	कविता	1
2.	लाख की चूड़ियाँ	कहानी	13
3.	बस की यात्रा	निबंध	24
4.	दीवानों की हस्ती	कविता	35
5.	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया	निबंध	46
6.	भगवान के डाकिए	कविता	56
7.	यह सबसे कठिन समय नहीं	कविता	66
8.	क्या निराश हुआ जाए	निबंध	79
9.	कबीर की साखियाँ	दोहे	92

1

ध्वनि

-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

मित्र आप सोच रहे होंगे कि मैं आपको मित्रें क्यों पुकार रही हूँ। अरे भई! अब आप आठवीं कक्षा में आ चुके हैं और लगभग सभी 12 वर्ष के या तो हो चुके हो या होने वाले हो अब आप फ़िर सोच मे पड़ गए कि आपकी आयु से धवनि कविता का क्या संबंधा? तो सोचो। सोचो सोचो। सही समझे। धवनि कविता युवावस्था में (के आरंभ होने की कविता है) प्रवेश होने की कविता है।

और जब बच्चे बाल्यकाल को छोड़ कर किशोरावस्था की पहली सीढ़ी पर पाँव रखते हैं तो यहीं से जीवन को दिशा मिलनी आरंभ होती है। हम बड़ों की तरह सोचने-समझने का प्रयास आरंभ कर देते हैं। यह युवावस्था एक लंबा सफर है जिसका अंत अभी नहीं हो सकता है। इसी भाव को लेकर कवि 'श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी ने यह कविता लिखी है।

'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी 'छायावाद' के प्रमुख कवियों में से एक हैं। प्रकृति प्रेम व गहन दार्शनिकता इस काल के कवियों की कविताओं का मुख्य आधाार रहा। 'निराला' जी इस कविता में अपने 'अंत' को अस्वीकार कर रहे हैं। वे युवाओं में नव-स्वप्नों व नव चेतना (नई जागृति) का संचार करना चाहते हैं। उन्होंने युवावस्था को जीवन की वसंत ऋतु के समान माना है जिसमें निराला जी समाज के युवाओं में जागृति (समाज के कल्याण की) व उल्लास की भावना भरना चाहते हैं।

प्रस्तुत कविता सभी के कल्याण व रचनात्मकता के भाव से ओत-प्रोत (भरी हुई, पूर्ण) कविता है। इसमें कवि अपने जीवन रूपी अध्त से युवाओं में सदगुणों तथा सर्वकल्याण के भावों को भर देना चाहता है।

वसंत ऋतु यहाँ युवावस्था का प्रतीक है, जहाँ सब कुछ सुंदर व अच्छा लगता है मन नवीन स्वपनों कुछ करने की चाह से भरा होता है केवल आवशयकता है तो वह है सही राह की।

- रचनाभिव्यक्ति

1. अपने मनपसंद मौसम पर कुछ पंक्तियाँ काव्य में लिखें-

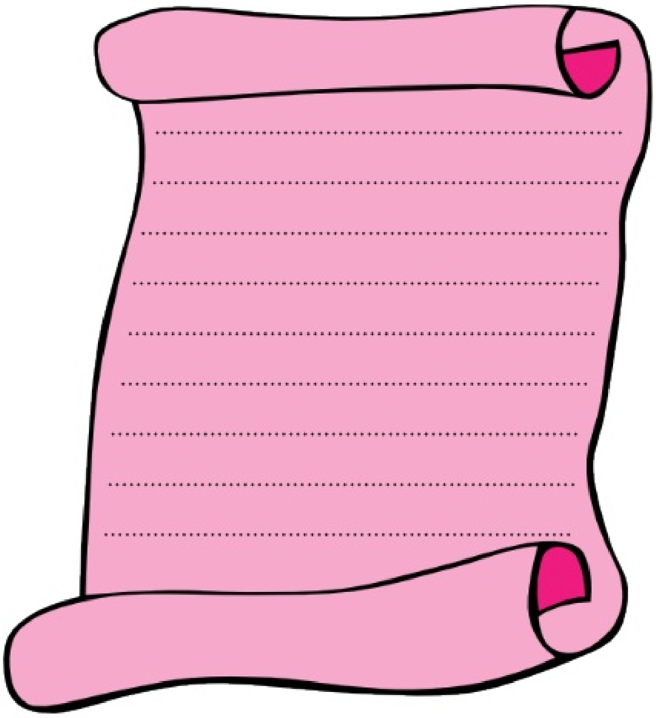

2. अपनी कविता के भावों से संबंधित कोई एक चित्र बनाएँ।

3. कवि की भाँति समाज की भलाई हेतु आप कोई संकल्प लेना चाहेंगे? अपना संकल्प लिखें-

4. आप व आपके मित्र मिलकर अपने समाज में व्याप्त कौन-कौन सी बुराइयों को दूर करना चाहेंगे।

....
....
....
....

5. वाक्य पूर्ण करें-:

(क) मैं सुबह-सुबह ही नहा लेता हूँ।

(ख) वह रातों-रात ....।

(ग) उसने बातों-बातों में ....।

(घ) शिशु को घड़ी-घड़ी ....।

(ड़) मुझसे रोज़-रोज़ ....।

6. खेलें खेल - (समूह में)

आपको एक वाक्य लिखना है जिसमें एक ही शब्द दो बार प्रयुक्त (प्रयोग) हो।

जैसे - वह कभी-कभी ही विद्यालय जाता है।

....
....
....
....
....

7. **कुछ मजेदार करें–**

आओ बच्चों खेलें खेल, शुद्ध शब्द पर चढ़ोगे सीढ़ी, अशुद्ध शब्द पर काटे साँप।

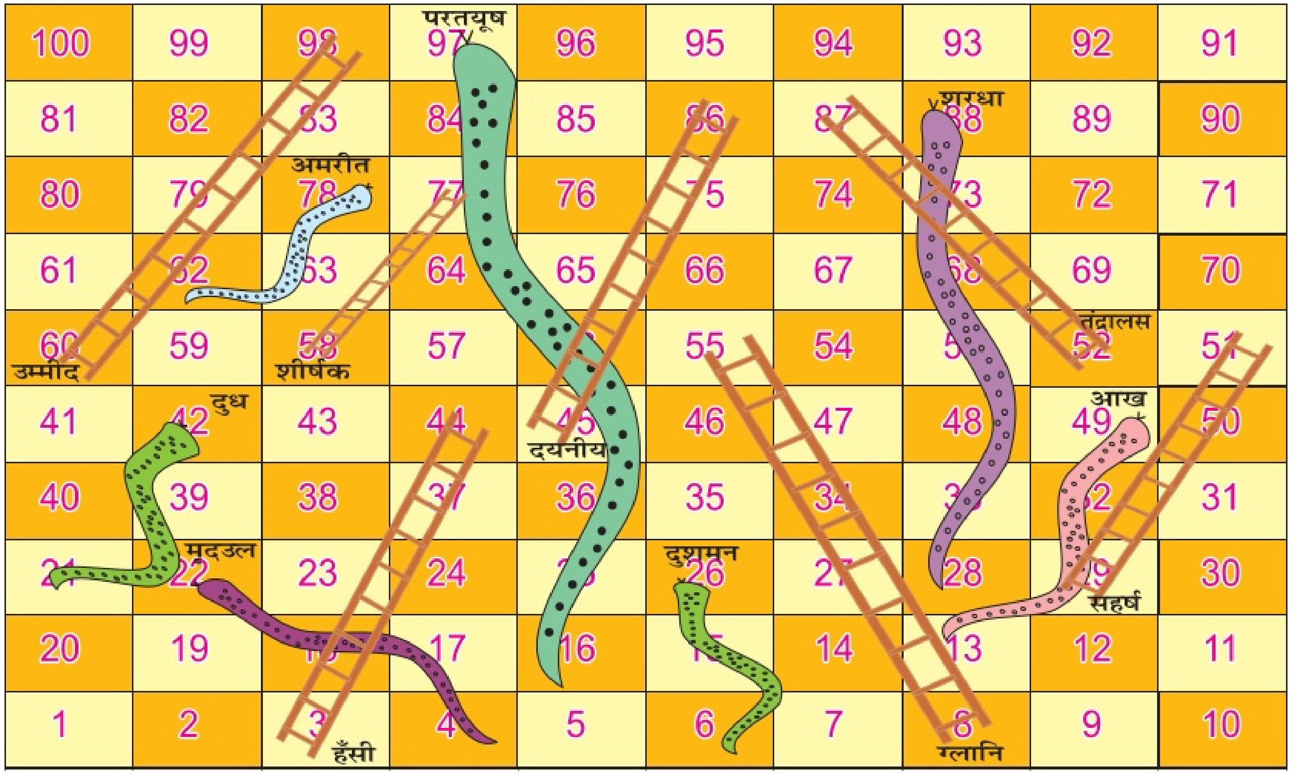

8. चित्र के नाम को देखते हुए खाली जगह में उनके दो-दो पर्यायवाची लिखो-

सूर्य ________ ________

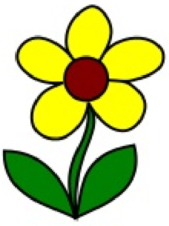

फूल ________ ________

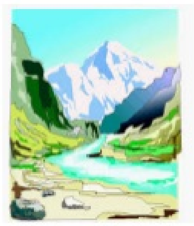

नदी ________ ________

पेड़ ________ ________

पात ________ ________

9. अरे! ये शब्द-अर्थ आपस में मिल गए हैं, इनका सही जोड़ा बनाएं-:

कर

प्रात:काल

पत्ता

शरीर

नींद से अलसाया

हाथ

कोमल

पात

प्रत्युष

मृदुल

गात-शरीर

....

....

....

....

10. शब्द निर्माण करें।

....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

11. दिए गए विशेषणों को वर्गीकृत करें-:

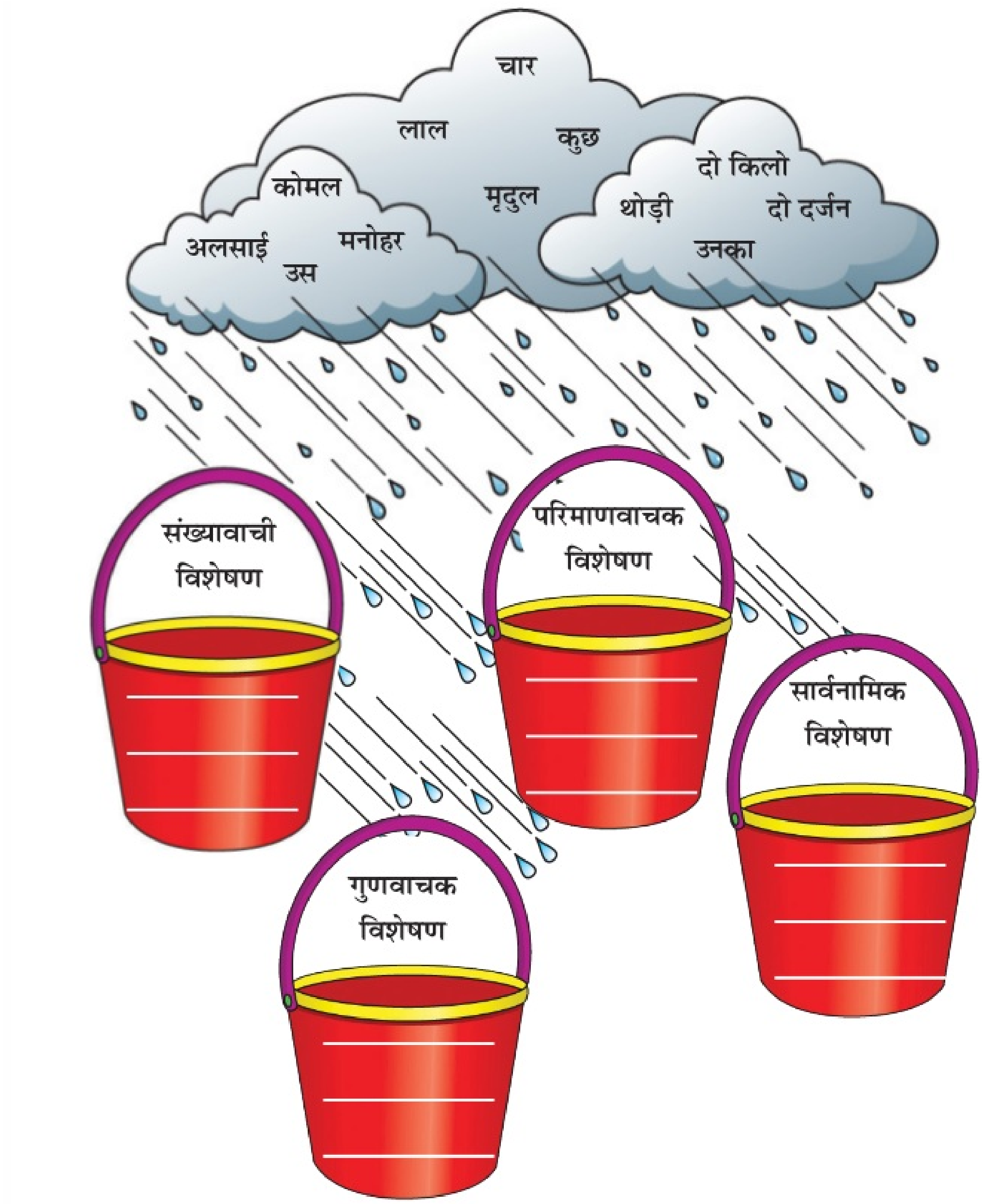

12. कुछ सोचने को

(क) इन चित्रें को देखकर आपको जिस मौसम की याद आ रही है उसका नाम लिखें-:

....
....

....

....

(ख) इस मौसम के विशेष त्यौहार, पकवान व फल-सब्ज़ियों के नाम लिखें-:

(ग) यह मौसम इन महीनों में आता है-:

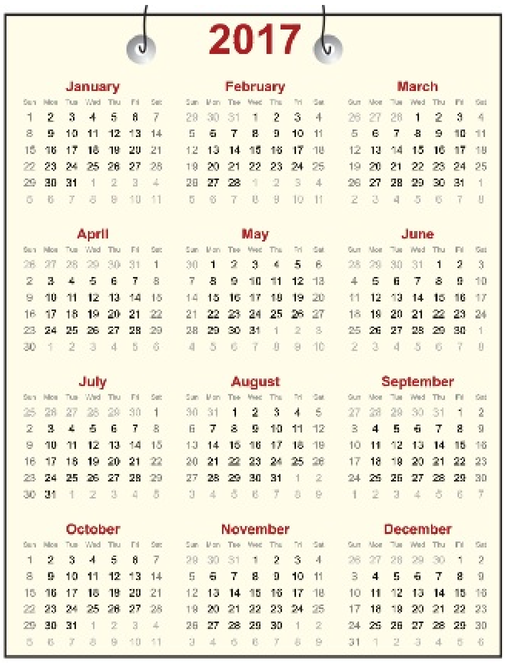

(घ) तालिका पूर्ण करें-

	त्यौहार	फल	सब्ज़ी	पेय पदार्थ	मेरी पसंद (खाने की वस्तु)
सर्दी	....	....	....	....	....
गर्मी	....	....	....	....	....
वर्षा	....	....	....	....	....

13. भाषा के खेल

(क) शब्द श्रृंखला को दिए गए शब्द से संबंधित अन्य शब्दों के द्वारा पूर्ण करें-

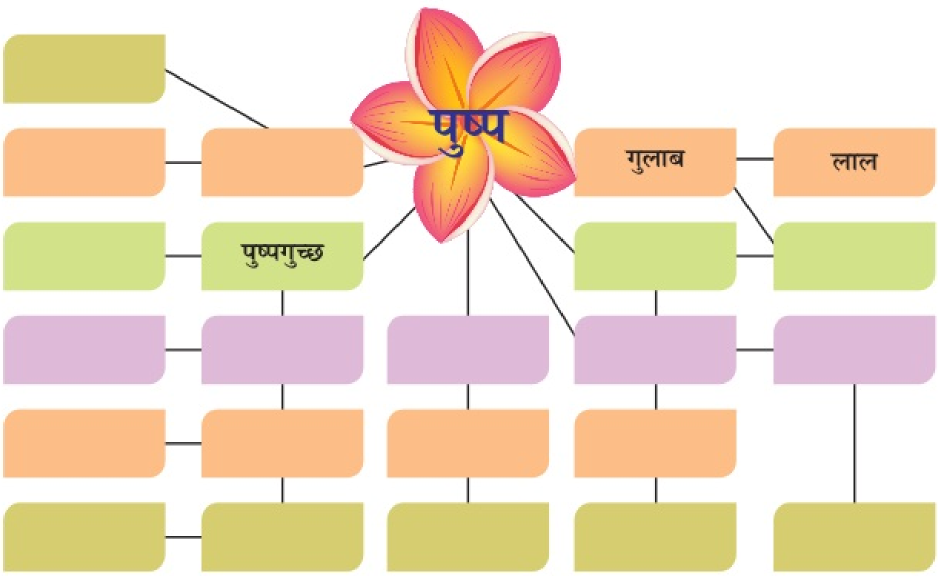

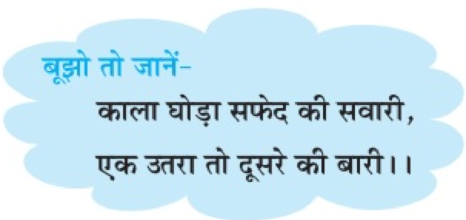

2

लाख की चूड़ियाँ

-कामतानाथ

पता है मित्रे, कई बार मुझे बड़ी खुशी होती है कि वाह! हम कितने अच्छे युग में जी रहे हैं। एक बटन दबाने भर से कितने सारे काम हो जाते हैं। है न?

स्विच ऑन करें कमरे में रोशनी आ जाती है, हवा भी और ठन्डक भी आ जाती है। एक बटन दबाओ मसाले पिस जाते हैं, कपड़े धाुल जाते हैं। मशीनों ने हमें कितना आराम पहुँचाया है, है न?

पर क्या मशीनों से हमें सिर्फ़ ़ायदे ही हो रहे हैं? मुझे लगता है कि सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है। मशीनों पर अधिाक निर्भरता की वजह से हम शारीरिक श्रम के महत्त्व को भूलते जा रहे हैं। हम लोगों के स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है।

एक और बात, मशीनीकरण से कई लोगों के रोज़गार पर भी बुरा असर पड़ा है।

क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानते हैं, जो हाथ का कारीगर (हस्त कारीगर) हो। जैसे - हाथ से मिट्टी की मूर्ति, घड़ा, दीया आदि बनाते हों, कपड़ों की बुनाई करते हों, लकड़ी का काम करते हों? क्या आपने इनके द्वारा बनाए गये सामान को भी देखा है? कितनी मेहनत से कितना सुन्दर सामान बनाते हैं, लेकिन बाज़ार मेंआए लोग इन सामान की जगह मशीनों से बने सामान खरीदना ज़्यादा पसन्द करते हैं क्योंकि वे अपेक्षाकृत सस्ते और अधिक टिकाऊ होते हैं।

ऐसे में, हस्तकारीगरों की आर्थिक स्थिति खराब होती जाती है। मानसिक रूप से भी उन्हें बड़ी ठेस पहुँचती है। जिस कला की वजह से उनका मान-सम्मान बढ़ना चाहिए था, समाज के लोग उसी कला को अवहेलना की दृष्टि से देखते हैं तो इन कलाकारों का आहत् होना स्वाभाविक है।

लाख की चूड़ियाँ कामता नाथ जी द्वारा लिखी हुई कहानी है इस कहानी के नायक है बदलू काका काका बदलू काका पहले एक खुशहाल जिंदगी जीते थे गाँव में उनकी बहुत आवभगत थी सभी लोग उनकी कला को बहुत आदर देते थे लेकिन समय के साथ सब कुछ बदल गया आइए पाठ प कर पता लगाते है कि बदलू काका के जीवन में कौन कौन से बदलाव आ गए इनकी वजह से बदलू काका के मन पर क्या असर पड़ा होगा।

1.

मैं काँच
की चूड़ी हूँ। मैं
देखने में बहुत सुन्दर
हूँ। मेरे और भी कई
गुण हैं। क्या तुम
इन्हें लिखोगे?
मैं लाख की
चूड़ी हूँ। मैं भी देखने
में कम सुन्दर नहीं हूँ। थोड़ी
महंगी तो हूँ पर मेरे और भी
कई गुण हैं। क्या आप
इन्हें लिख पायेंगे?

2.

मेरे गाँव में आज भी लोग एक सामान
देकर दूसरा सामान खरीदते हैं।

क्या आप को पता है, इस तरह की
खरीद-फरोख़्त को क्या कहा जाता है?

....
....
....
....

बदलू काका

3.

लेखक बदलू को 'मामा' न कहकर 'काका' क्यों कहते थे?

....
....
....
....

बदलू काका ने अपने द्वारा बनायी गई
आख़िरी चूड़ी का जोड़ा ज़मींदार को न देकर,
अपनी पुत्री को क्यों दिया होगा?

....
....
....
....

बदलू काका के मन में क्या दर्द था?

....
....
....
....
....
....

4.

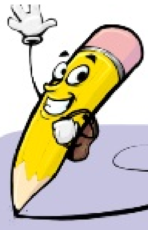

आप छुट्टियों में किस के घर जाना पसन्द करते हैं?

....

....

....

इनके घर की सबसे अच्छी बात आपको कौन सी लगती है?

....

....

....

5. चूड़ियों के अतिरिक्त लाख से और क्या-क्या बनाया जा सकता है?

(i) .... (ii) ....

(iii) .... (iv) ....

6. उन राज्यों के नाम लिखकर, उन पर रंग भरिए जिनमें लाख के सामान का निर्माण होता है।

7. इस घड़े में कुछ देशज और विदेशज शब्द एक साथ आकर बैठ गये हैं। इन्हें अलग-अलग गिलासों में भरिए।

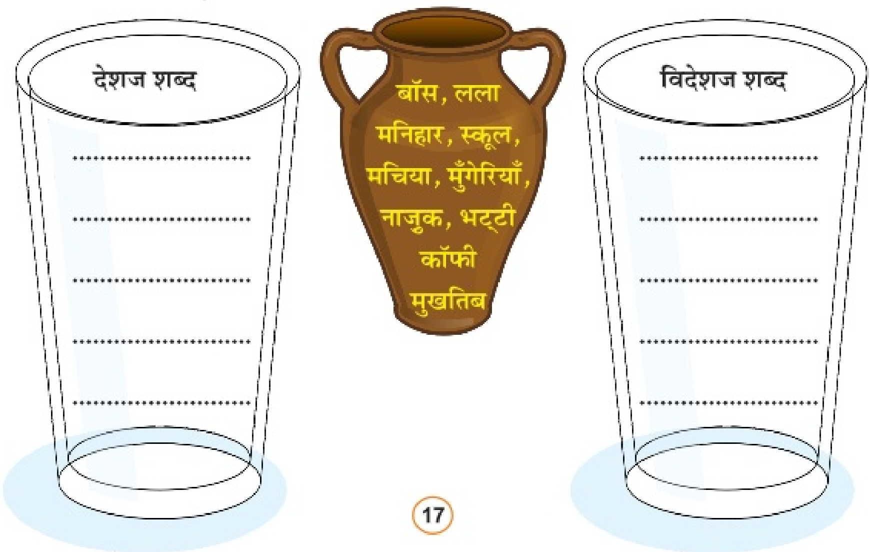

8. तत्सम और तद्भव शब्दों को छाँटकर अलग-अलग बॉक्स में भरिए।

बारिश, वर्षा, दृष्टि, अंजुली
घृत, दुग्ध, वृक्ष, बरस, वर्ष, वृक्ष
कार्य, अलग, घी, दूध, ओष्ठ, हस्त

9. इन शब्दों को उनके अर्थ के साथ मिलाइए।

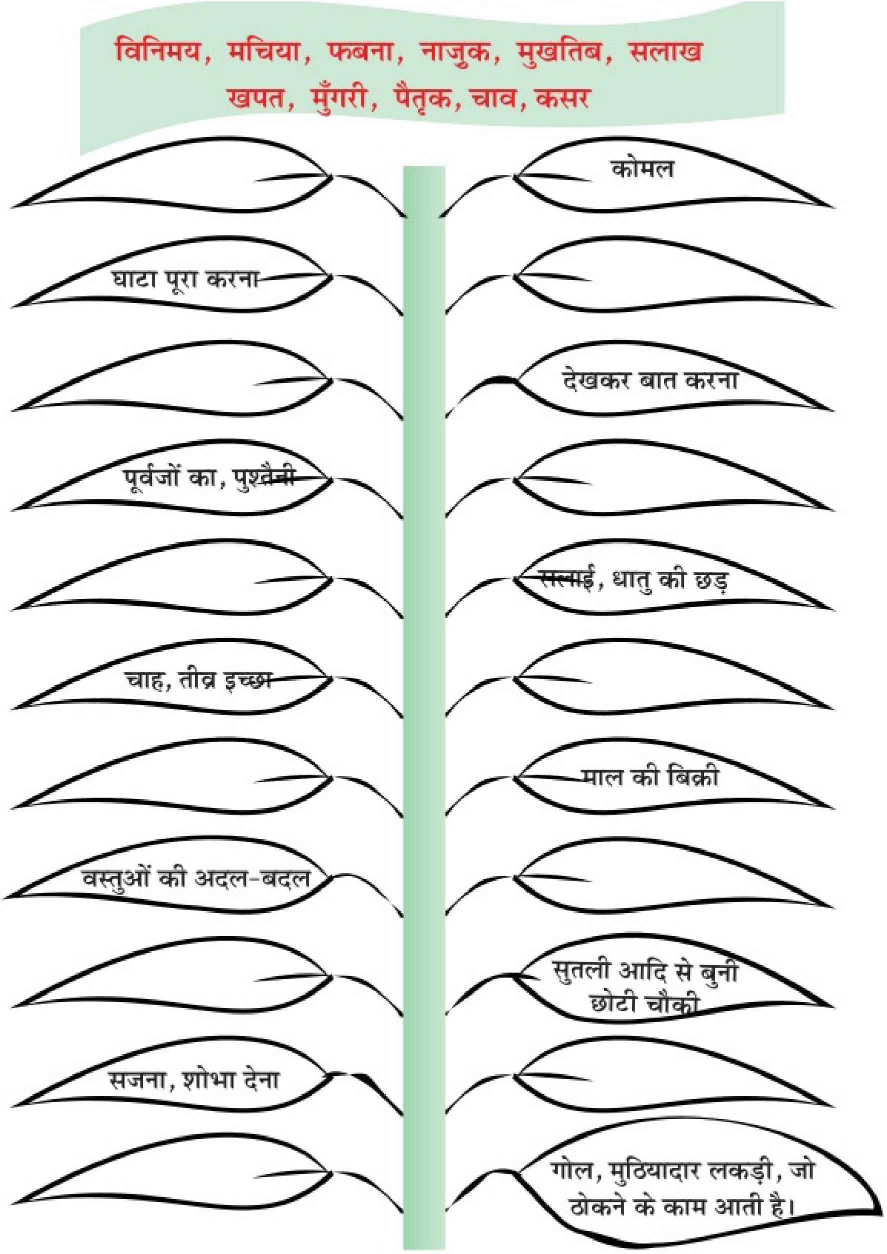

10. सोचो, लिखो और चर्चा करो।

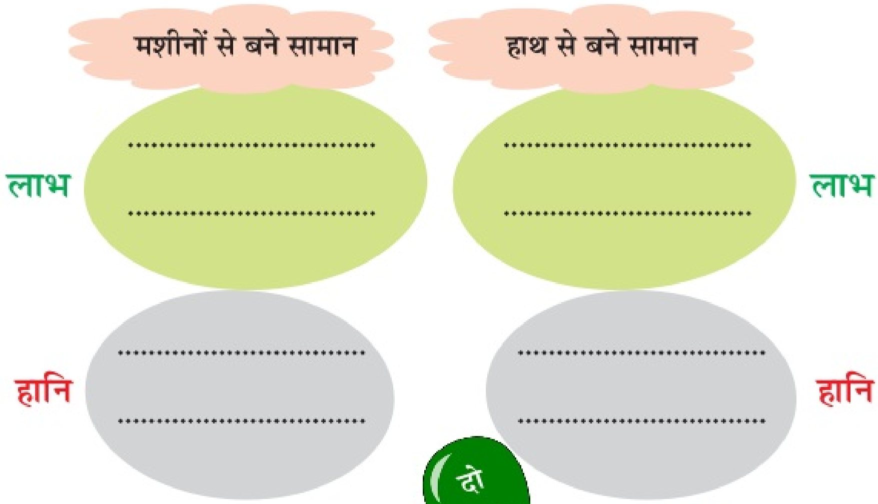

11. हमारे उदाहरण लिखिए-

12. संज्ञा शब्द छाँटिए

आ	म	क	ला	प	ह
नी	चा	स	ख	ट	ब
घ	न	च	टि	ना	द
ड	रू	प	या	आ	लू
क	च	गो	द	द	झ
ज्ञ	ट	लि	ग्रा	मी	ण
चू	ड़ि	याँ	ड़	ह	फ

शब्द-सीढ़ी

13. संकेतों की सहायता से विलोम शब्द लिखकर शब्द-सीढ़ी पूरी करो-

संकेत

सीधे

1. गंदा का विलोम
2. परिश्रमी का विलोम
3. अंधकार का विलोम
4. सरल का विलोम
5. गरीब का विलोम

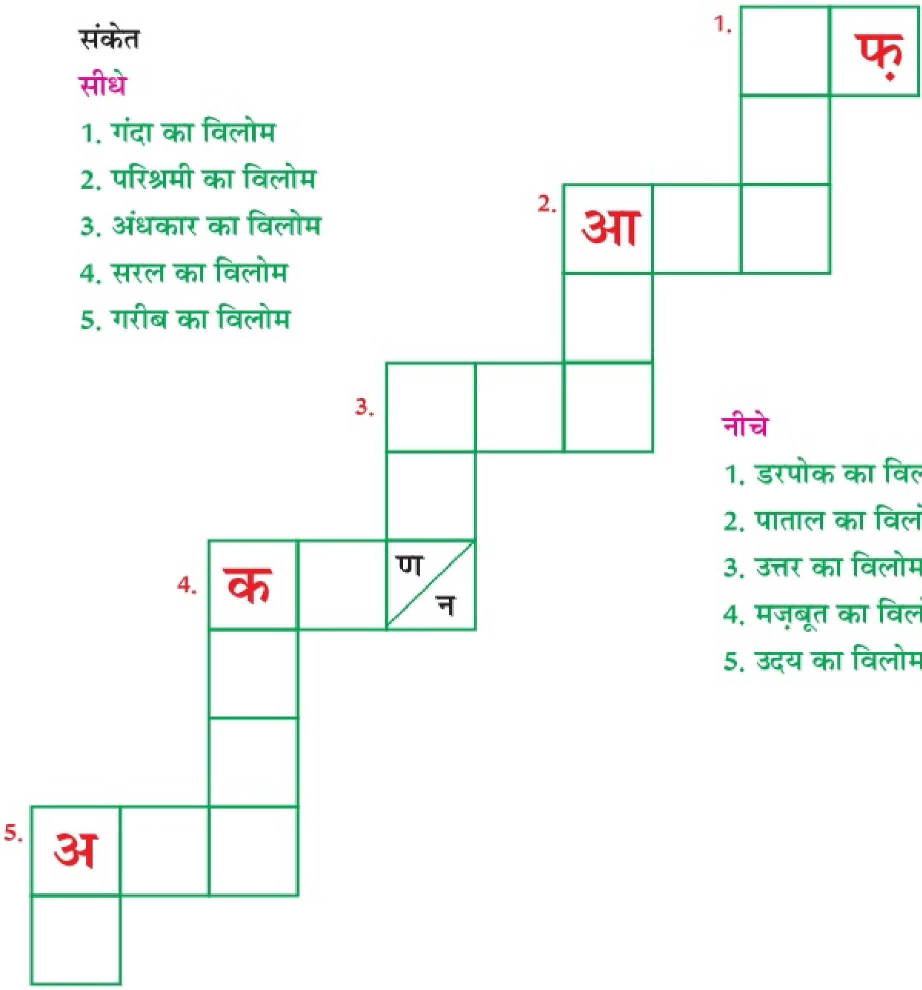

नीचे

1. डरपोक का विलोम
2. पाताल का विलोम
3. उत्तर का विलोम
4. मज़बूत का विलोम
5. उदय का विलोम

14.वचन बदलिए -

रुपया	जोड़ा	गोली	कलाई	चूड़ी
....	....	....	....	....

15. सही मिलान कीजिए -

	पुल्लिंग	—	स्त्रीलिंग
1.	काका		लड़की
2.	मर्द		गाय
3.	लड़का		काकी
4.	पिता		औरत
5.	बैल		माता

बूझो तो जानें-

रोज़ सुबह आता हूँ,
शाम से चला जाता हूँ।
मेरे आने से हो उजियारा,
जाने से होता अंधियारा

3

बस की यात्रा

-हरिशंकर परसाई

बच्चो! ऐसा आपने बस की यात्र करते हुए अक्सर देखा व सुना होगा। क्या वास्तव में कंडक्टर घर से सवारी लाएगा? नहीं! इस प्रकार के ताने व कटाक्ष जिससे हम गंभीर से गंभीर बात दूसरों को इस प्रकार से कहते हैं कि न तो सुनने वाले को बुरा लगे और सुनने वाला भाव को समझ भी जाए, यही व्यंग्य कहलाता है। 'बस की यात्र' पाठ भी अपने आप में एक 'व्यंग्य कथा' है। व्यंग्य को सामान्य शब्दों में ताना या चुटकी भी कहते हैं। और ऐसी ही एक बस की यात्र का वर्णन है, जिसे 'हरिशंकर परसाई' जी ने लिखा है। हरिशंकर परसाई जी ने व्यंग्य विधाा को हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि (सीमा) से हटाकर समाज में व्याप्त समस्याओं से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएं महज गुदगुदी ही उत्पन्न नहीं करती, बल्कि जीवन की उन वास्तविकताओं को सामने रखती हैं जिनसे आम आदमी का प्रतिदिन सामना होता है।

1. पाठ में चित्रित बस की व्यथा का अपने शब्दों में वर्णन करें।

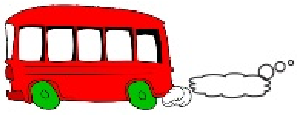

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2.अपने शब्दों में नीचे दिये गये वाक्यों को पूरा कीजिए।

हाय! इस बुढ़ापे में भी मुझे आराम नहीं। ना तो मुझसे चला ....

मेरे पाँव ....

....

मेरा कान ....

....

मेरी पीठ ....

....

मेरी आँखे ....
....
....

....
....

3. आपने अपने जीवन में कभी न कभी यात्रा बस या रेल द्वारा अवश्य की होगी। आप अपने यात्र संबंधाी खट्ठे-मीठे अनुभवों को अपने मित्रें के साथ साझा करें। अपनी यात्रा के किसी एक अनुभव को यहाँ लिखें-:

मेरी यात्रा- **एक बार मैं** ....
....
....
....
....

....
....
....
....
....

आओ खेलें खेल-

4. आप बस के मालिक हैं। श्याम (एक यात्री) ने आपकी बस में यात्र की। वह बहुत दुखी हुआ बस की खराब दशा से। वह आपसे बस की दयनीय दशा की शिकायत करने आया है। आप अपनी बस के पक्ष में (उसकी अच्छाइयाँ गिनाते हुए) श्याम को जवाब दें।

श्याम : (एक यात्री) - ....

बस का मालिक : (मैं) - ....

श्याम - ....

मैं - ....

श्याम - ....

मैं - ....

श्याम - ....

मैं - ....

श्याम - ....

मैं - ....

5. मुहावरों को पहचानो व पूर्ण करो-:

....

....

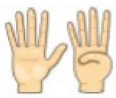 + 2

....

....

....

....

6.

मुझे ठीक करो। (वर्तनी शुद्ध करें)

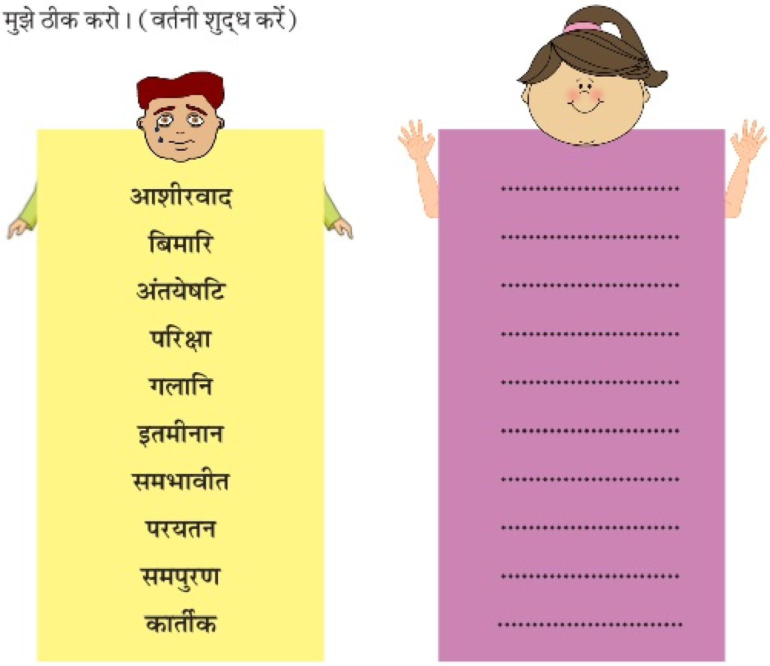

7. मुझे पूर्ण करें-

- सूर्य पूर्व से उदय होता है और .... में अस्त होता है।
- नियम पालन करने के लिए होते हैं .... के लिए नहीं।
- असहयोग नहीं, मित्रें को तो संकटके समय ....करना चाहिए।
- सागर बहुत ....है परंतु तालाब उथला ।
- प्रदूषण से पहाड़ों का शुद्धवातावरण भी ....हो गया है।

8. वाक्य बनाएं - (अनेकार्थी शब्दों से)

1. .... हार

....

2. .... हार

....

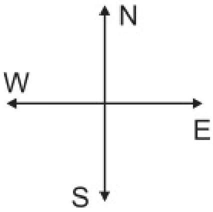

1. .... उत्तर

....

? → जवाब

2. .... उत्तर

....

1. .... हल

....

$10 + 20 = \boxed{30}$

2. .... हल

....

1. .... कर

....

2. .... कर

....

1. .... अर्क

....

2. .... अर्क

....

1. .... अंबर

....

2. .... अंबर

....

1. .... घन

....

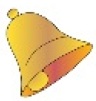

2. .... घन

....

9. शब्दों की रेलगाड़ी चलने वाली है। इसमें पाठ में से ढूंढकर विभिन्न भाषाओं के शब्द लिखें-

शब्दों की रेलगाड़ी

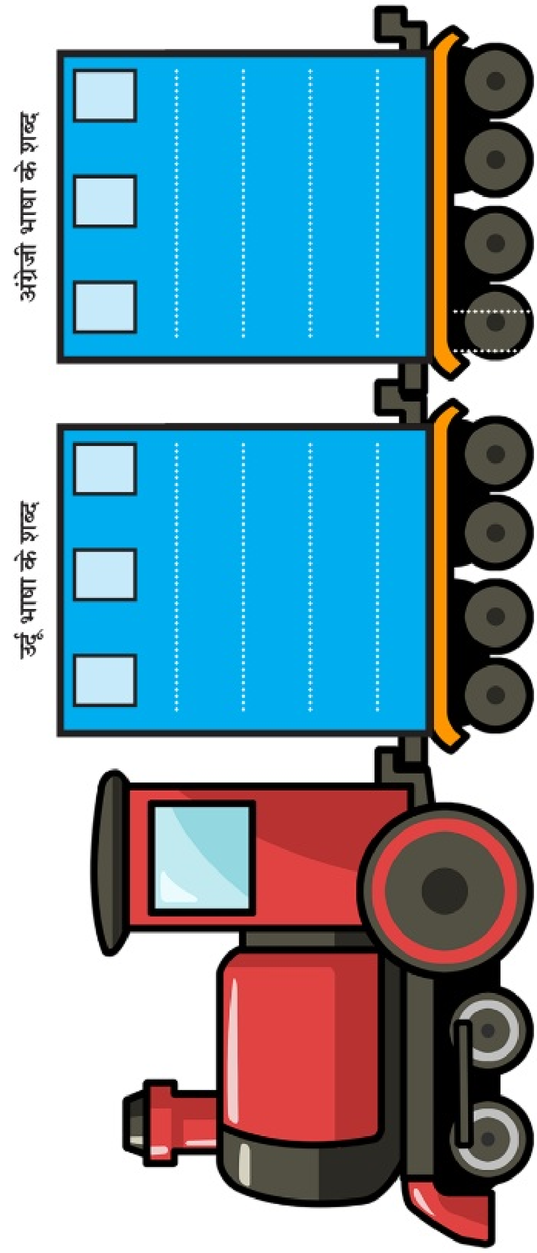

10. ''हम पाँच मित्रें ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें।''

उपर दिए गए वाकय में ने, कि, की व से वाक्य के दो शब्दों में संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं।

नीचे दिए गए अनुच्छेद में रिक्त स्थानों में उचित कारक चिन्ह लिखें।

''सुनीता .... अपनी .... टाँगों ....हाथ .... पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग .... नीचे .... ओर लटकाया। फ़िर पलंग .... सहारालेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने............ लिए पहिया कुर्सी .... मदद लेती है। आज वहसभी काम फ़ुर्ती .... निपटाना चाहती थी। हालाँकिकपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उस .... लिए कठिन कामहैं। पर अपने रोज़ाना .... काम करने के लिए उस .... स्वयं ही कई तरीके ढूँढ निकाले हैं।'''

आओ खेलें खेल-

11. खेल का नाम है डमप शरॉटस (Dump charades)। इसमें कक्षा को समूहों में विभाजित करें। अब जिस भी समूह सेछात्रआए,

अधयापिका/अधयापक उसछात्रको कक्षा के बाहर ले जाकर एक बूझो तो जानें-मुहावरा बताएँ औरछात्रको उस मुहावरे का मूक अभिनय / संकेतों द्वारा करना है। बाकी के समूहदो किसान मिलते जाएं, इसे पहचानने का प्रयास करें।

बूझो तो जानें-

दो किसान मिलते जाएं,

उनकी खेती बढ़ती जाए।

4

दीवानों की हस्ती

-भगवती चरण मिश्र

'प्रेम' जीवन का आधाार है। प्रेम या स्नेह के बिना हमारा जीवन नीरस है। मनुष्य ही क्या विश्व में सभी प्राणियों को प्रेम की आवश्यकता होती है। प्रेम के द्वारा तो पशुओं को भी अपना साथी बना लियाजाता है। तो क्यों न सभी के साथ प्रेम बाँटते हुए जीवन जिया जाये!'दीवानों की हस्ती' कविता 'भगवती चरण वर्मा जी' द्वारा लिखी गई ऐसी ही कविता है जिसमें कवि 'निश्छल भाव से संसार को प्यार सेजिओ और जीने दो' का संदेश दे रहे हैं।

यह जीवन एक यात्र ही है और इस यात्र में हम संसार से कुछ लेते व संसारको कुछ देते हुए ही चलते हैं। इस संसार में हर प्राणी प्रेम का याचक(माँगने वाला, चाहने वाला है) है, तो क्यों न सभी पर हम प्यारलुटाते हुए चलें व सांसारिक बंधानों में न बँधा कर जीवन को खुलकर जीएं। कवि का मानना है, न कोई अपना है, न पराया। अत: सभी केसाथ प्यार से मिल कर रहना चाहिए व अपनी असफलताओं का दुख नहीं मनाना चाहिए।

1. सोचें व लिखें-

(किस ओर चले? यह मत पूछो,।

चलना है, बस इसलिए चले,

जग से उसका कुछ लिए चले,

जग को अपना कुछ दिए चले,)

प्र.1 यहाँ 'चलना' शब्द किस संदर्भ में लिया गया है?

....
....

....
....

....
....

....

....

....

....

प्र.2 हम 'जग' से क्या-क्या ले सकते हैं?

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्र.3 हम 'जग' को क्या-क्या दे सकते हैं?

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्र.4 इन पंक्तियों से (कविता से) यदि आपको किसी अन्य गीत याफिल्मी गाने की याद आ रही है तो लिखें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

रचनाभिव्यक्ति

2.मेरी कविता -

नीचे दी गई पंक्ति को आगे बढ़ाइए-

अब नहीं मैं छोटा बच्चा,

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. बच्चो, हम प्रतिदिन कभी न कभी मस्ती करते ही रहते हैं। क्या कभी ऐसा हुआ कि हमारी मस्तीसे किसी को (घर पर, विद्यालय में, या कहीं बाहर) हानि या दुख पहुँचा और हमने ठान लिया कि जीवन में कभी ऐसा नहीं करेंगे। अपने जीवन के ऐसे अनुभव को लिखें।

....

....

....

....

....

....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

4. जीवन में कोई न कोई हमें बहुत प्रभावित करता/करती है। आपको भी किसी न किसी ने अवश्य प्रभावित किया होगा,उनके बारे में लिखें।

मुझे अपने जीवन में सर्वाधिक प्रभावित .... ने किया है। वे मेरे ....
....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

5. क्या होगा यदि -

(क) हम केवल मस्ती ही करते रहें?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

(ख) यदि हम केवल दुखी ही रहें?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....

....

....
....

....
....

....
....

....
....

(गा) यदि हम जीवन में हर समय खुश रहें?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

6. वर्ग पहेली -

विशेषण चुनकर लिखें-:

मी	घू	ल	क	द	चा
ठा	द	म्बा	फे	छ	ला
प	उ	स	की	दो	ल
ठ	ह	थो	प	द	ट
डां	ल	ड़ा	ज	र्ज	र
बे	इ	मा	न	न	क

चुने गए विशेषणों के लिए विशेष्य लिखें-:

	विशेषण	विशेष्य
1.	मीठा	आम
2.	....	
3.	सफेद	
4.	....	
5.	....	किताब
6.	....	

7. शब्द बनाएँ-

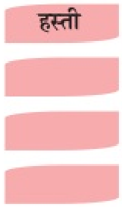

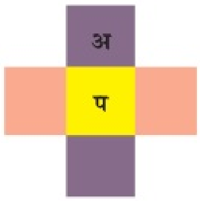

....

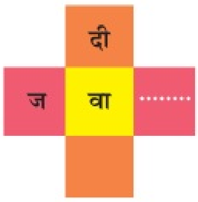

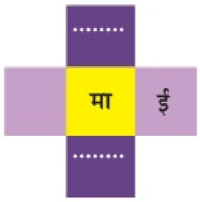

....

आओ खेलें खेल-

8. समान धवनि वाले शब्द लिखें

जैसे –	गाकर	खाकर	....	....	....
	रस्सी	....	....	....	....
	पढनेवाला	....	....	....	....

9. स्त्रीलिंग व पुल्लिंग-

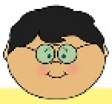

पंडित	पंडिताइन
विद्वान	....
कवि	....
लेखक	....
अभिनेता	....
कर्ता	कर्ती
पाठक	....
चिड़ा	....
महाराज	....
सम्राट	....
पति	....

10. 'घड़ों पानी पड़ना' एक मुहावरा है। इसका क्या मतलब है? इस मुहावरे को सुनकर मन में एक चित्र सा बनता है। तुम भीकिन्हीं दो मुहावरों का चित्रंकन अपनी कल्पनानुसार करें

-दीया तले अँधोरा

सिर मुंडाते ही ओले पड़ना

ईद का चाँद

ऊँट के मुँह में जीरा

आओ खेलें खेल-

11. **जोड़े (दो के समूह) में खेलें-**

आप का मित्र आप की कार है। उसकी पीठ पर अंगुली रखने से वह चलेगा। दाएं कंधो पर अंगुली रखने से वह दाई तरु घूमेगाव बाएं कंधो पर अंगुली रखने से वह बाएँ घूमेगा। पूरा हाथ पीठ पर रखने से वह रूक जाएगा। आपके साथी की आँखे बंदहोगी, यदि वह टकराया तो आप आउट फिर साथी आपको कार बनाकर चलायेगा।

बूझो तो जानें-

न चाहिए इंजन मुझे,
न चाहिए पैट्रोल-डीज़ल।
जल्दी-जल्दी पैर चलाओ,
मंजिल पर अपनी पहुँच जाओ।

5

चिट्ठियों की अनठी दुनिया

-अरविंद कुमार सिंह

डाकिया डाक लाया, डाक लाया,

डाकिया डाक लाया,

खुशी का पैगाम कहीं...

कही दर्दनाक लाया...।

अरे! यह गीत सुनते ही किस की याद आ जाती है? डाकिया? हाँ, बिल्कुल ठीक। डाकिया डाक (चिट्ठी) लाता है। डाक के साथ वह हमारे लिए और भी बहुत कुछ लाता है। वह हमारे जीवन को हमारे अपनों सेजोड़े रहता है।

बच्चो, इस पाठ में लेखक अरविंद कुमार जी ने चिट्ठियों संबंधी अपने विचारों को एक निबंधा के रूप में बाँधाा है। 'पत्र लेखन' भी साहित्य की एक विधाा है जिसका आधाुनिक तकनीकों के चलते धाीरे-धाीरे लोप (गायब, कम) होता जा रहा है। कहीं न कहीं इन्हीं कारणों से 'पत्र लेखन' को हमारे पाठ्यक्रम में भी आवश्यक रूप से रखा गया है।

1. पत्र लेखन धाीरे-धाीरे कम होता जा रहा है। इसके क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

क्योंकि ....

....
....

....
....

....
....

....
....

....

....

....

....

....

....
............................क्योंकि ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. डाकिया हमारे लिए और क्या-क्या लाता है?

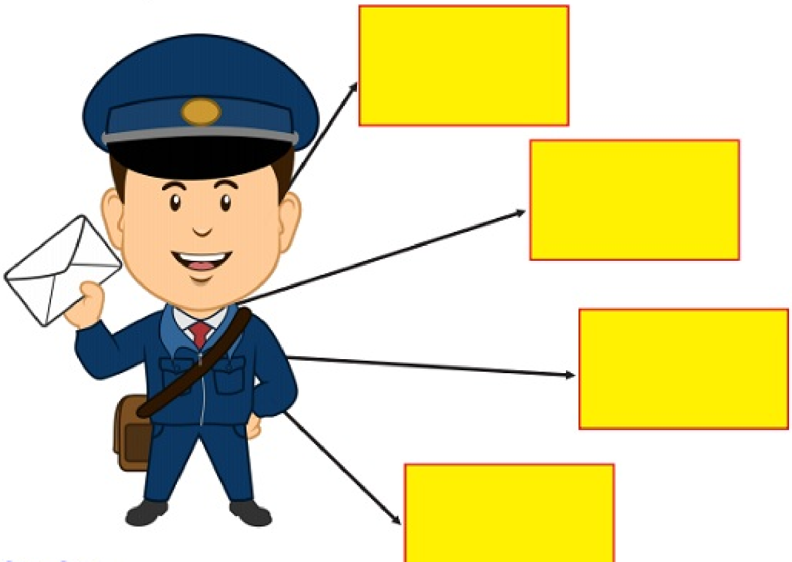

3. रचनाभिव्यक्ति:-

कोई ऐसा गीत या कविता जिसमें संदेश भेजने (चिट्ठी भेजने) की बात कही गई हो, सोचे व कक्षा में गाकर सुनाओ और यहाँ लिखो-

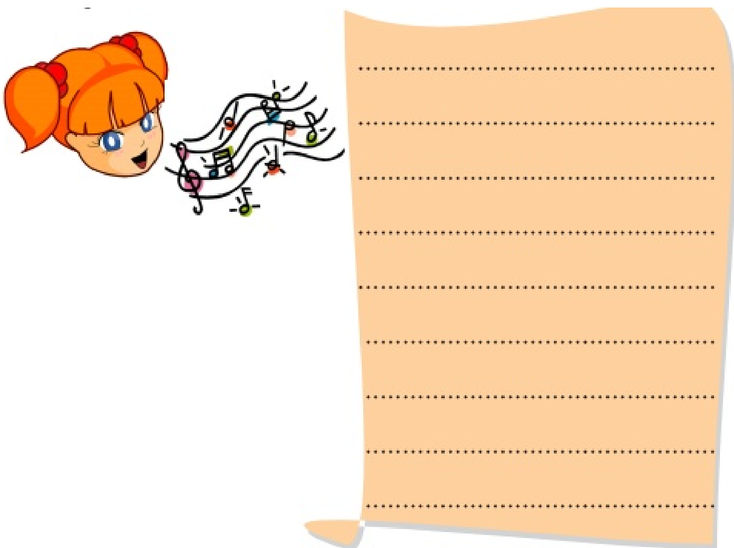

4. अपने मित्र को स्वतंत्रा दिवस की बधााई देते हुए -:

- मोबाइल फोन पर भेजने के लिए एस.एम.एस (S.M.S)लिखें-:

- पत्र लिखें-:

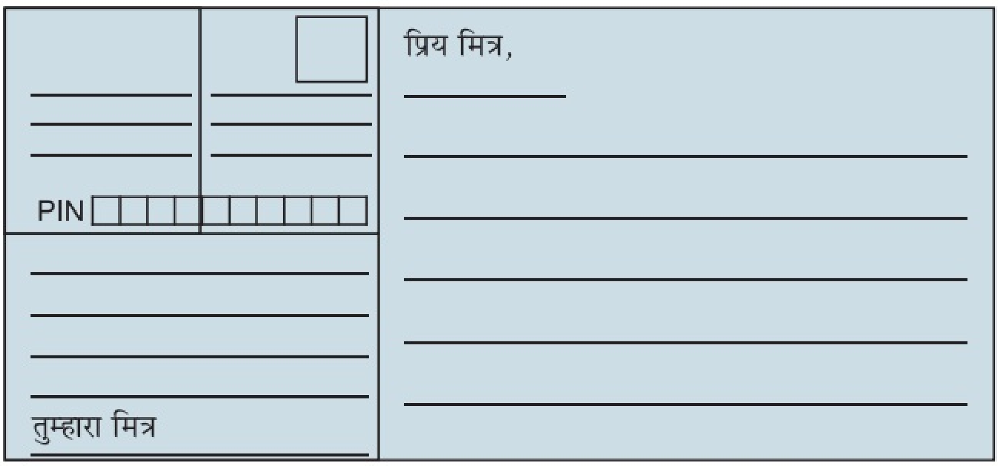

5. उपरोक्त संदेश लेखन के दोनों प्रकार में क्या समानताएंव क्या असमानताएं है, सोचें व लिखें-:

समानताएँ	असमानताएँ
1.	1.
2.	2.
3.	3.

शब्दाभिव्यक्ति-

6. 'पत्र' लगाकर नए शब्दों का निर्माण करें-:

समाचारपत्र ....

....

....

....

7. शब्दों को तोड़ें-:

जैसे- रवीन्द्र = रवि + इन्द्र

अब अपनी पाठ्य पुस्तक से इसी प्रकार के शब्द (जो दोशब्दों से मिलकर बने हों) छाँटे व उन्हें अलग-अलग दो शब्दों में लिखें-:

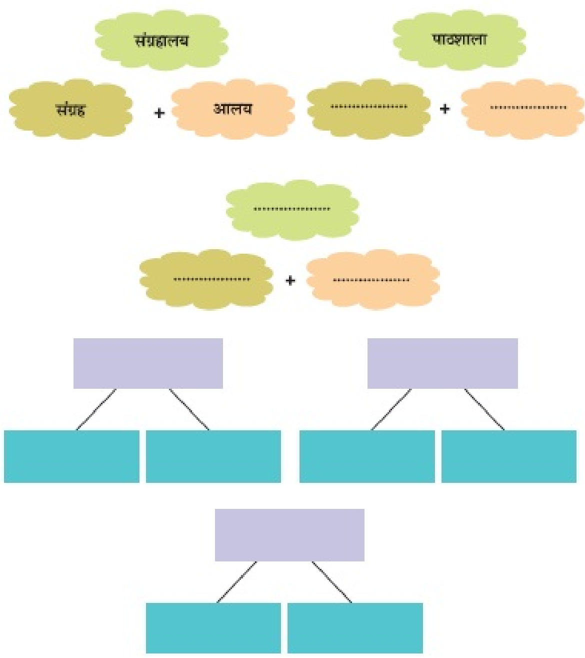

शब्दाभिव्यक्ति-

8. 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए।

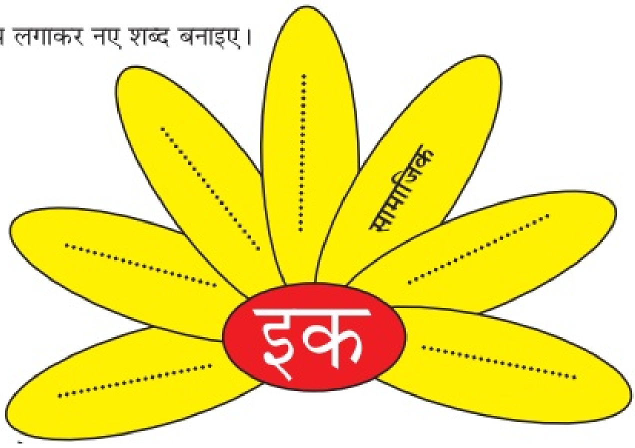

9. कुछ सोचने को-

दिल्ली की पिन कोड संख्या 1 1 0 0 4 5 11 से ही शुरूहोती है तो पता पता करें-:

- क्या अन्य राज्यों की भी 11 से ही पिन कोड संख्याआरंभ होती है?

....

- अपने आस-पास के 5 पडोसी राज्यों के पिनकोड ज्ञात करें व लिखें?

राज्य का नाम	पिन कोड संख्या के पहले दो अंक
1.	....
2.	....
3.	....
4.	....
5.	....

10. आपके पाठ्यक्रम मेंपत्रलेखन अनिवार्य गतिविधि है। दो कारणों में इसकी आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त करें। यदि आपको लगता हैपत्र लेखन की आवश्यकता नहीं है तो इसके भी दो कारण लिखें।

पत्र लेखन आवश्यक हैं क्योंकि ....

....

....

....

पत्र लेखन आवश्यक नहीं क्योंकि ....

....

....

....

11. संचार के पुरातन व नवीन (आधुनिक) साधानों के नामलिखें व दोनों में से एक-एक का चित्र भी बनाएँ (याचिपकाएँ)-

पुरातन (प्राचीन)	आधुनिक (नवीन)
....	....
चित्र	चित्र

12. अपने प्रिय शिक्षक को पत्र लिखें व बताएं कि वे आपके प्रिय क्यों है। साथ ही उन्हें आपने जीवन का लक्ष्य बताएं व उस लक्ष्य को पाने में आने वाली कठिनाइयों का भी वर्णन करें। और अंत में आप अपने लक्ष्य को पा ही लेंगे यह विश्वास भी दिलाएँ।

....

....

....

....

....

....
....

....
....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

आपकी आज्ञाकारी शिष्य

कल्पना करें–

13. आप 1000 वर्ष पूर्व के समय के राजा हैं। आप अपने पड़ोसी मित्र राजा को संदेश भेजना चाहते हैं। आप मित्र को कैसे पत्र या संदेश भेजेंगे।

[ ] के द्वारा

अथवा

[ ] के द्वारा

उस संदेश में क्या लिखेंगे?

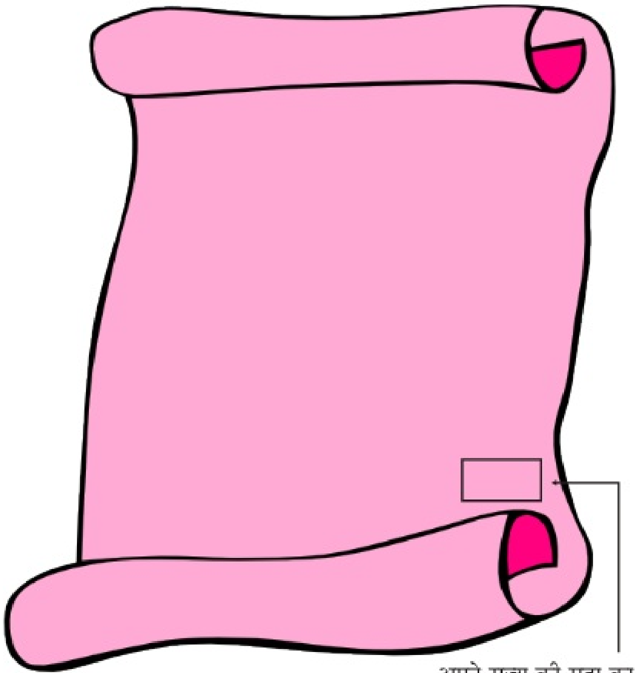

अपने राज्य की मुद्रा का निशान बनाएं।

संदेश वाहक का चित्र बनाइए।

बूझो तो जानें- गोल-गोल आँखों वाला,
लम्बे-लम्बे कानों वाला।
गाजर खूब खाने वाला,
नाम बताओ तो मानें लाला।

6

भगवान के डाकिए

-रामधारीसिंह दिनकर

दोस्तो! आपने हम पक्षियों को आकाश में उड़ते हुए तो ज़रूर देखा होगा। है न! अरे क्या कहा? दिल्ली की भीड़-भाड़ में आपको खुला आकाश ही नज़र नहीं आता? बात तो सही है। पर आपने हमें देखा ज़रूर होगा। क्या हम पक्षियों को देखकर आपके मन में कभी यह प्रश्न कौंधाा है कि हम पक्षी कहाँ से उड़कर आते हैं? कहाँ तक जाते होंगे? जब एक शहर की सीमा समाप्त हो जाती है,तो क्या हम पक्षी भी टॉल टैक्स देकर ही दूसरे शहर में प्रवेश करते हैं? हम वीज़ा और पासपोर्ट के लिए कहाँ जाते होंगे?

दरअसल दोस्तो; हम सभी को प्रकृति ने बनाया है। आप मनुष्य लोग यह भूल से गये हैं। आप लोगों ने खुद को शहर, प्रान्त, देश,भाषा, धार्म जाति आदि की सीमाओं में खुद को बाँधा लिया है। वैसे तो आप मनुष्य लोग स्वयं को सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित कहते हैं, पर मुझे लगता है कि आपसे अधिक सुसंस्कृत तो हम पक्षीगण हैं। आप ही देखिए, हमें कहीं भी आने जाने की मनाही नहीं। मनचाहे तरीके से जीवन जीने की आज़ादी भी है; फिर भी हम ऐसा कोई कार्य नहीं करते जिससे दूसरे को हानि पहुँचे। आप मनुष्य भी हमारे आचरण से ऐसी शिक्षा क्यों नहीं लेते?

मित्रे, हम बादल हैं। हम उमड़-घुमड़ कर आपके शहर में जल बरसाने आते हैं। क्या आपको पता है कि हम कहाँ से आते हैं? क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की है कि जो जल हम आपके घर-आँगन में बरसा रहे हैं, उसे हम कहाँ-कहाँ से इकट्ठा करके

लाए हैं? दरअसल हमलोग आप मनुष्यों की तरह देश और प्रान्त की सीमा में बंधो हुए नहीं है। इसीलिए हम एक देश की धरती पर दूसरे देश का जल बसाकर आप लोगो को भी एकता का पैगाम देते है आप सब लोग समझ पाते है न हमारी बातो को।

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवी श्री रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी कविता भगवान के डाकिए के माध्यम से इन्ही बातों को आप तक पहुँचाने की कोशिश की है।

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार है उन्होंने ओजस्वी वाणी मृत को भी जीवित करने में समर्थ है।

1. कुछ शब्द और उनके अर्थ इस फूल की पंखुडियों में जल्दी से आकर बैठ गये थे। लेकिन जल्दीबाजी में वे एक-दूसरे से अलग हो गये हैं।

क्या आप उन्हें एक-दूसरे के साथ बैठने में मदद कर सकते हैं?

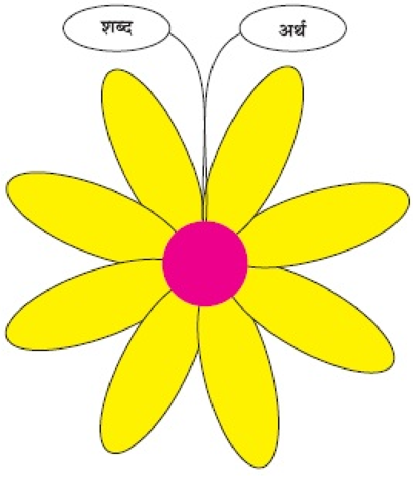

2. आप अपनी खैर खबर अपने प्रिय जनों तक कैसे पहुँचाते हैं?

....

....

....

....

....

....

3. क्या आपने अपने आस-पड़ौस में डाकिए को डाक बाँटते हुएदेखा है? पुराने समय में डाकिए से लोगों को अपनापन महसूस होने लगता था। आपको क्या लगता है, ऐसा क्यों होता होगा?

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4 सोचो जब फोन नहीं थे ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

5.

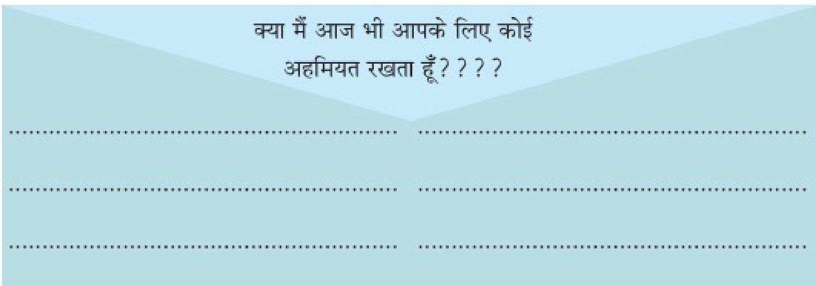

6. एक चिट्ठी की कहानी उसी की ज़ुबानी

मैं चिट्ठी हूँ। कई लोग मुझे पत्र भी कहते हैं,..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

7. चलो, कहानी पूरी करें!

एक दिन, एक छोटी सुंदर चिड़िया आकाश का संदेश लेकर धारती की ओर आ रही थी। रास्ते में उसकी मुलाकात .... से हुई। चिड़िया ने कहा ....

....

....

....

.... जब चिड़िया धारती पर पहुँची, तो उसने देखा ....

....

....

....चिड़िया बहुत ....

....हुई। उसने वापस जाकर आकाश से कहा ....

....

....

....

....

....
....

....
....

8. दिये गये शब्दों को प्रयुक्त करते हुए, आप छोटी सी कविता रचें।

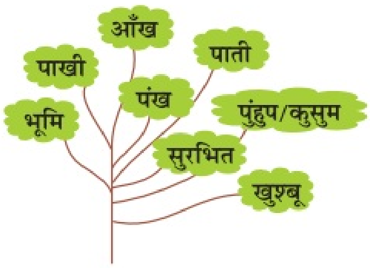

....
....
....
....
....
....
....
....

9. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन बाँच (पढ़) सकते हैं?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

10. धारती पर कितने महादेश (महाद्वीप) हैं? उनके नाम लिखिए।

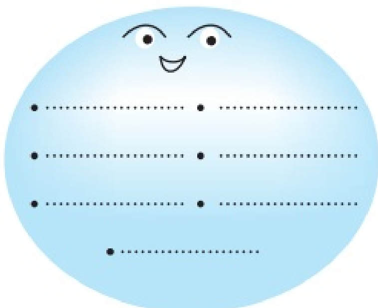

- .... • ....
- .... • ....
- .... • ....
- ....

11. 'भगवान के डाकिए' कविता की आपको सबसे अच्छी पंक्तियाँ कौन सी लगी? उन्हें लिखिए।

12. इन पंक्तियों का आशय भी स्पष्ट करें।

13. ''एक देश की धारती दूसरे देश को सुगंधा भेजती है'' इसकथन के भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

14. नीचे कुछ चित्र दिये गये हैं। आप उनके कितने नाम (पर्यायवाची शब्द) लिख सकते हैं?

(i) पर्वत ....

(ii) पक्षी ....

(iii) 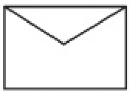 पत्र ....

(iv) 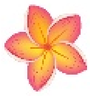 पुष्प ....

(v) रवि ....

(vi) मेघ ....

(vii) घर ....

(viii) 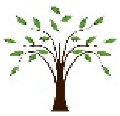 वृक्ष ....

(ix) आसमान ....

(x) धरती ....

15. विलोम शब्दों के सही जोडे बनाइए।

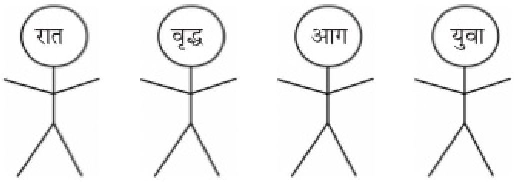

रात ....

....

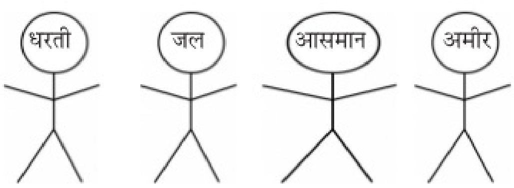

....

....

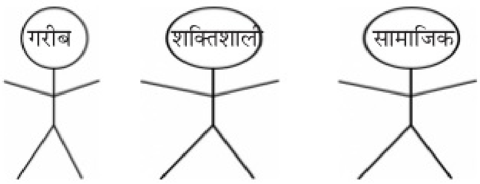

शक्तिशाली ....

....

....

14. दिए गए उपसर्गों से शब्द निर्माण करें व पत्तों में लिखें

7

यह सबसे कठिन समय नहीं

-जया जादवानी

बच्चो! आपने प्रसिद्ध अभिनेत्री औरनारत्यांगनासुधाचन्द्रन कानाम अवश्य सुना होगा। क्या आपको यह ज्ञात है, कि बचपन में किसी दुघ टिना के कारण उन्होंने अपना एक पैर खो दिया था। परन्तुइतनी भयानक दुर्घटना के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी, न जीवन से निराश हुई। बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति और लगन का परिचय देकर सदा अपने लक्ष्य-पथ पर अग्रसरित होती रहीं।

दूसरी तरु कुछ ऐसे लोग भी हैं जो छोटी-से-छोटी परेशानी आने पर भी घबरा जाते हैं और जीवन से विमुख होने लगते हैं। क्या ऐसे लोग कभी भी अपने अस्तित्व के साथ काई न्याय कर पाते होंगे? मुझे तो ऐसा नहीं लगता, आपको क्या लगता है?

अपनी कविता 'यह सबसे कठिन समय नहीं' में कवयित्री सुश्री जया जादवानी ने भी अनेक ऐसे प्रसंगों और कारणों को सामने रखने का प्रयास जिनसे जीवन के प्रति सकारात्मक सोच का विकास हो सके।

जया जादवानी आज के समय की एक प्रमुख साहित्यिक हस्ताक्षर है महिला विमर्श की जानी मानी लेखिका जया जी का जन्म 1948 में जबलपुर में हुआ था। तत्वमसि अंदर के पानियों में कोई सपना काँपता है उससे पूछो और उठाता है कोई एक मुठ्ठी ऐश्वर्य आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ है।

1. कुछ ऐसे लोगों के बारे में जानकारी एकत्रतित कीजिए, जिन्होंने विषम परिस्थिति में भी जीवन से हार न मानकरदूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया हो-

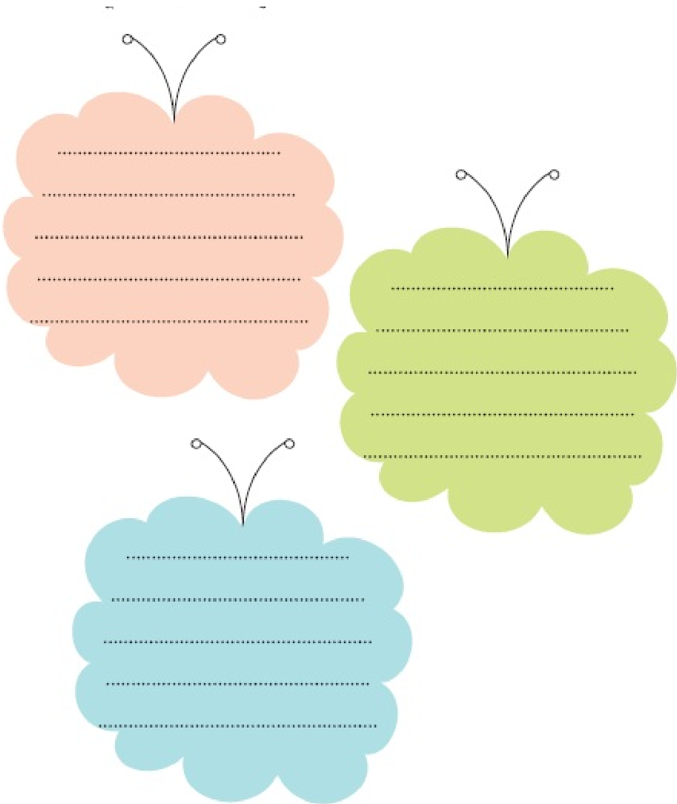

2.आपका/आपकी मित्र इन दिनों बहुत उदास रहता/रहती है। उसके जीवन में मुसीबतों का पहाड़ जो टूट पड़ा है। ऐसे में आप अपने मित्र को जीवन के प्रति उत्साहित करते हुए एक पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

लिखिए

4. कविता की पंक्तियों को मिलाइए और उनमें एक जैसे रंग भरिए।

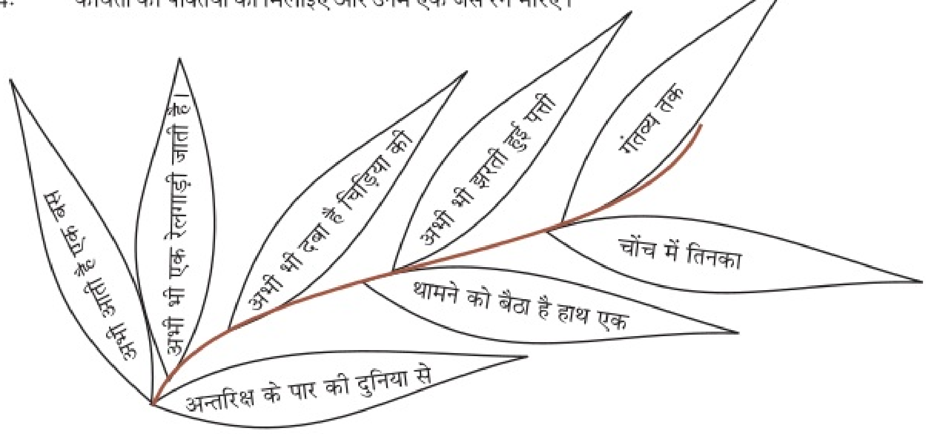

5. उन तर्कों को लिखिए, जिनके माधयम से कवयित्री जया जादवानी नेयह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, कि यह सबसे कठिन समय नहीं है।

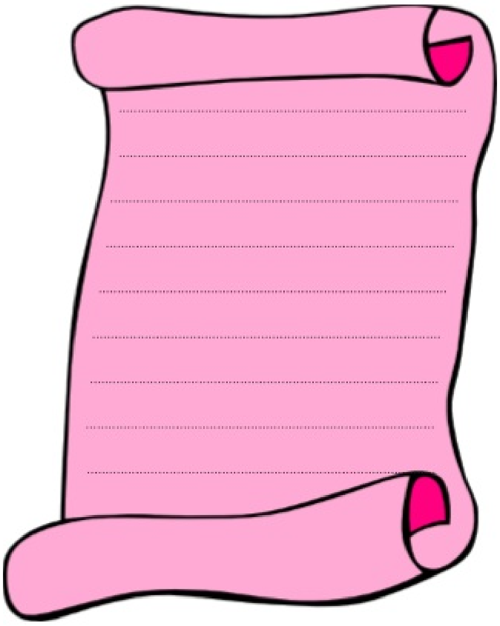

6.यह चिड़िया अपनी चोंच में तिनका दबाकर कहाँ और क्यों ले जा रही होगी?

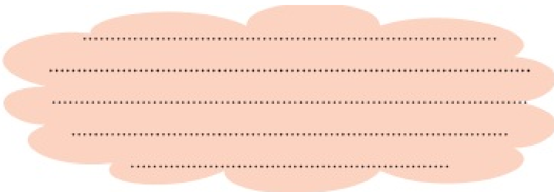

7.

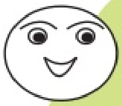

मैं जंगल की एक कहानी हूँ। आपने अक्सर मुझे अपने दादा/दादी, नाना/नानी से सुना होगा। क्या आप मुझे अपने शब्दों में लिख सकते हो?

....

....

....

....

क्या आप इस कहानी के पारम्परिक रूप में कोई बदलाव लाना चाहोगे?

....

....

....

....

8.

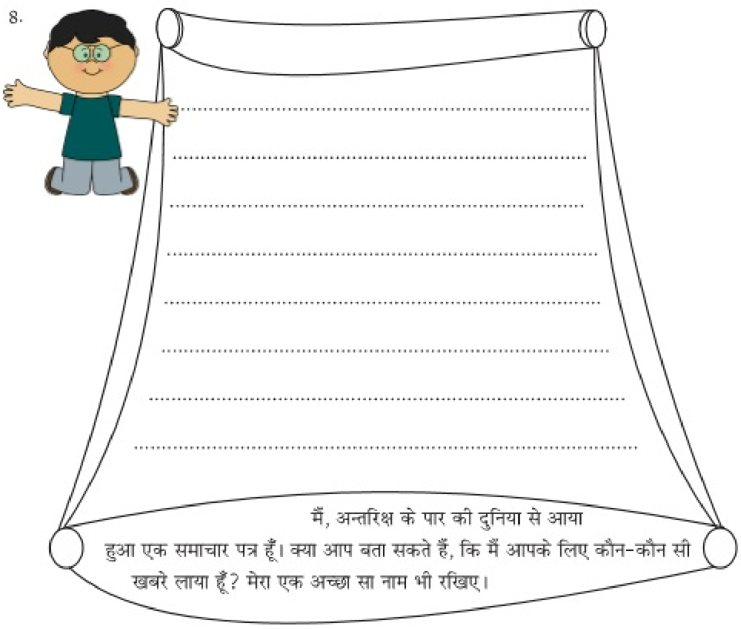

9. इन वाक्यांशो का प्रयोग करके, वाक्य बनाइए।

10. जब आप स्कूल से लौटते हैं, तो आपकी प्रतीक्षा करता हुआ कौन मिलता/मिलती है?

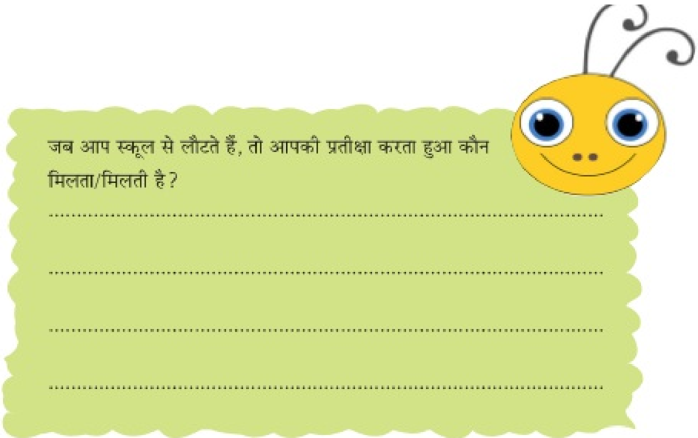

11. क्या आपने भी कभी किसी की प्रतीक्षा की है? ....
....

....
....

....
....

....
....

प्रतीक्षा करते हुए आपको कैसा अनुभव होता है? ....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

11. दिये गये शब्दों में से उपसर्ग, प्रत्यय और मूल शब्दों को पृथक करके लिखिए।

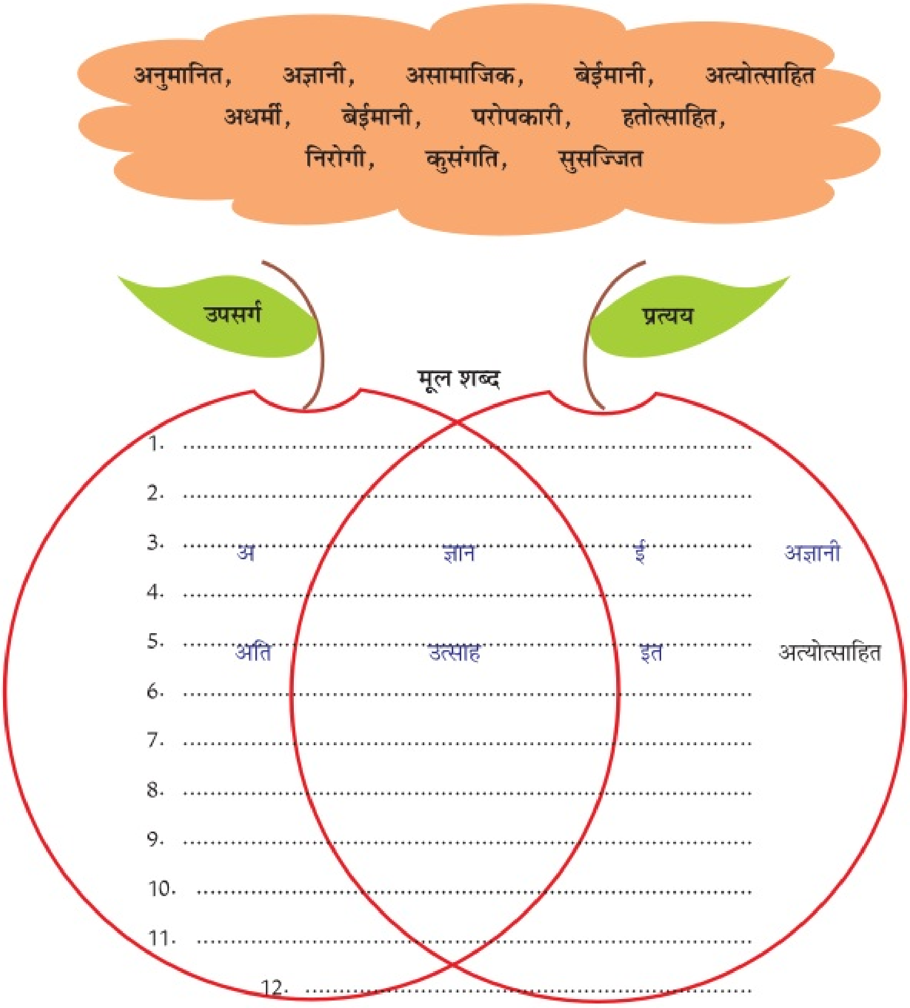

12. मित्रे, कई शब्द सुनने में कितने समान होते हैं न! लेकिन उनके अर्थ बिल्कुल अलग होते हैं। जैसे **दिन** और **दीन** ऐसे (सुनने में एक जैसे, लेकिन अलग अर्थ वाले) शब्दों को **श्रुति सम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।** नीचे कुछ ऐसे ही शब्द दिये गये हैं। आप इनका अर्थ ज्ञात (पता) कीजिए और इन शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

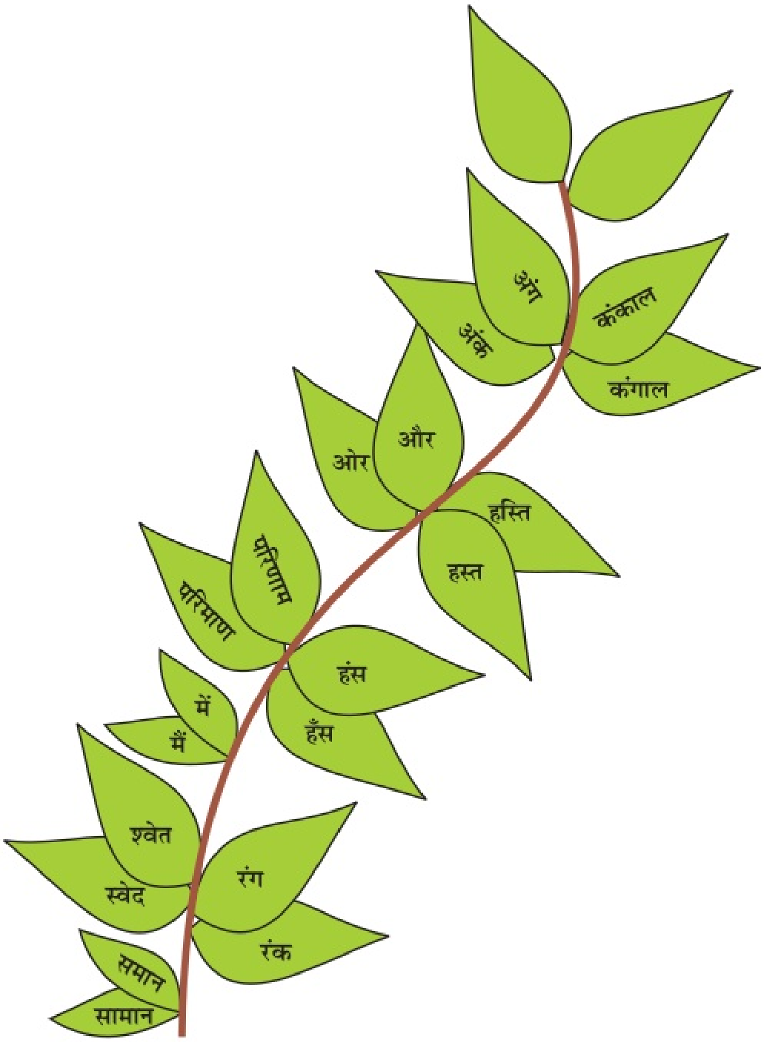
अंग
कंकाल
अंक
कंगाल
और
ओर
हस्ति
हस्त
परिणाम
परिमाण
हंस
में
मैं
हँस
श्वेत
स्वेद
रंग
रंक
समान
सामान

	शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
1.	....	....	....
	....	....	....
2.	....	....	....
	....	....	....
3.	....	....	....
	....	....	....
4.	....	....	....
	....	....	....
5.	....	....	....
	....	....	....
6.	....	....	....
	....	....	....
7.	....	....	....
	....	....	....
8.	....	....	....
	....	....	....
9.	....	....	....
	....	....	....
10.	....	....	....
	....	....	....

13 इस बॉक्स में कुछ संज्ञा और सर्वनाम शब्द एक साथ आकर बैठ गये हैं। आप उन्हें अपनी–अपनी टोकरियों में बैठाइए।

14. इन संज्ञा शब्दों को अपने सही स्थान पर लिखिए।

भाववाचक संज्ञा

बूझो तो जानें-

ऊपर से नीचे बहता हूँ,
हर बरतन को अपनाता हूँ।
देखो मुझको बर्बाद नन करना,
वरना मुश्किल हो जाएगा जीना।।

8

क्या निराश हुआ जाए

-हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी के अप्रतिम निबंधाकार हैं। इनके निबंधों में जहाँ अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति हार्दिकता का भाव होता है वहीं नवीन जीवन बोधा तथा विकास की राह में उसे पुन: परिभाषित करने की चाह भी होती है। द्विवेदी जी अपने ललित निबन्धों में अपने पांडित्य को अपनी भाषा का बोझ नहीं बनने देते बल्कि भाषा की लय, वस्तुओं के बिंबात्मक चित्र तथा संदर्भों का बखूबी प्रयोग करते हुए भाषा को सहजता की ओर ले जाते हैं। इसी कारण उनके निबंधा न तो गंभीरता का तेवर छोड़ते हैं और न सहजता का बाना।

प्रस्तुत निबंधा 'क्या निराश हुआ जाए' में लेखक इस बात कोलेकर चिंतित है कि पूरे देश में ठगी, डकैती, चोरी, भ्रष्टाचार, अविश्वास इत्यादि का जो वातावरण बना है वह मनुष्य के लिए अत्यंत निराशाजनक है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मन में बार-बार यह प्रश्न कौंधाता है कि मानव महासमुद्र कही जाने वाली भारतीय आदर्शों की मिलन भूमि जिसमें आर्य, द्रविड़, हिन्दू, मुसलमान तथा अनेक जनजातियाँ शामिल हैं, जो तिलक, गाँधी, रवीन्द्रनाथठाकुर मदन मोहन मालवीय आदि की प्रेरणाओं से प्रेरित है, वहाँ क्या सचमुच आज ऐसा माहौल बन गया है जब ईमानदारी को मूर्खता और सच्चाई को भय अथवा बेबसी की जननी समझा जाने लगा है।क्या सचमुच जीवन के महान मूल्यों से लोगों की आस्था हिलने लगी है। लेखक को इसका विश्वास नहीं है। लेखक का मानना है किभारत सदा से भौतिकता के स्थान पर मनुष्य के आंतरिक गुणों को अधिाक महत्व देता आया है। सुदूर अतीत से ही भारत वर्ष में शोषितों, वंचितों और कमज़ोर लोगों की सहायता को धार्ममाना गया है। भारत में कानून और धार्म में अंतर नहीं किया जाता रहा है आज एका एक यह देखा जा रहा है कि बहुत धर्म भीरु लोग भी कानून की कमियों का लाभ उठाने में संकोच नहीं करते किन्तु भारत में अधिकतर लोग अब भी धर्म को कानून से बड़ी चीज मानते है इसलिए सामान्य भारतीय आज भी महिलाओ के सम्मान मानव मानव में प्रेम को महत्व देते है और चोरी को गलत व दूसरो को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझते है आइये पाठ प कर पता लगाए कि लेखक ने किन उदाहरणों से अपनी बात पुष्ट की है।

1. इस पाठ में दया-ममता, सच्चाई और ईमानदारी आदि अच्छाइयों की बात की गई है आपके अनुसार और कौन-कौनसी अच्छाइयाँ हैं जिनसे अपने और समाज के जीवन को और अच्छा बनाया जा सकता है। उनके नाम लिखिए-

शब्द - रचना

2. भाषायी अभिव्यक्ति में शब्दों का बहुत महत्व होता है। अपनी बात कहने के लिए सही शब्दों का चुनना ज़रूरी होता है। शब्द ही भाषा का मूल आधाार होते हैं।

मूल शब्दों में उपसर्ग अथवा प्रत्यय जोड़कर या दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाए जाते हैं।

उपसर्ग - उपसर्ग भाषा की वह लघुतम (सबसे छोटी) इकाई है जिसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता फ़िर भी इसकी स्वतंत्र सत्ता है, इसलिए इन्हें शब्दांश कहा जाता है। इन्हें शब्दों के आरंभ में जोड़कर शब्द-निर्माण किया जाता है। इनके जुड़ने से शब्द के अर्थ में विशेषता आ जाती है। अभी हम उपसर्गों की बात करेंगे।

नीचे कुछ उपसर्ग दिए गए हैं धयान से पढ़िए और उनसे नए-नए शब्द बनाइए।

उपसर्ग	अर्थ
बे	बिना
अ	निषेध (मनाही)
दुर	बुरा

बे + ... = -	बे + ... =
बे + ... = -	बे + ... =
अ + ... = -	अ + ... =
अ + ... = -	अ + ... =
दुर + ... = -	दुर + ... =
दुर + ... = -	दुर + ... =

3. शिक्षक आठ-आठ विद्यार्थियों का समूह बनाकर उन्हें लेखक के द्वारा बस यात्र के दौरान हुए अनुभवों पर चर्चा केलिए प्रेरित करे तथा समूहों की सुविधाा व रूचि के अनुसार इस घटना को कहानी या नाटक में रूपांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

4. पाठ में आए मानवीय गुणों को व्यक्त करने वाले शब्दों तथा मनुष्य की कमजोरियों/कमियों को व्यक्त करने वालेशब्दों की विद्यार्थियों से सूची बनवाई जा सकती है। समान आकार की पर्चियों पर इन शब्दों को लिखकर 'राजा','मंत्री', 'चोर', 'सिपाही' की तरह का खेल खेला जा सकता है। अर्थात् प्रत्येक गुण को कुछ धानात्मक अंक आवंटित किए जा सकते हैं जबकि कुछ अवगुणों को ऋणात्मक अंक आवंटित किए जा सकते हैं। पर्चियों को उछाला जाए तथा प्रत्येक विद्यार्थी अपनी मनपसंद पर्ची उठा ले अब सभी विद्यार्थिओं की परचिओ के आधार पर उनको अंक आवंटित कर दिए जाए यही प्रक्रिया कई बार दोहराकर खेल को आगे बाया जा सकता है।

5. शिक्षक स्वयं का पत्रान्तरण कर अपने आप को लेखक (हजारी प्रसाद द्विवेदी) के रूप में प्रस्तुत कर सकता है तथा विद्यार्थी लेखक से प्रत्यक्ष बातचीत चर्चा अथवा उसका साक्षात्कार ले सकते है।

6. आप बस से कहीं जा रहे हैं। आपके पास की सीट पर एक बुजुर्ग महिला बैठी हैं। टिकट के लिए पैसे निकालते समय उनके पर्स से 100 रूपये को एक नोट और कोई एक कागज़ गिर पड़ा। महिला का धयान इन चीज़ों पर नहीं था। बस के अन्य यात्रियों की नज़र नहीं पड़ी। आप क्या करोगे?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

जो कागज़ महिला के पर्स से गिरा वह क्या हो सकता है?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

आपको ऐसा क्यों लगा ?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

7. आपने अपने आस-पास के बड़े-बूढ़ों को कई बार यह कहते सुना होगा कि उनके ज़माने में दुनिया बहुत अच्छी थी, अब अच्छे लोग नहीं मिलते। आपका इस विषय में क्या विचार है? लिखें।

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

8. पिछले (विगत) एक सप्ताह के समाचार पत्र में से कम से कम पाँच ऐसी घटनाओं का संग्रह कीजिए; जहाँ किसी ने नि:स्वार्थ भाव से किसी और की सहायता की हो। अगर आपके पास समाचारपत्रहै तो आप इन घटनाओं की कटिंग यहाँ चिपका सकते हैं।

9. 'आज के लोग बेईमान अधिाक हैं, ईमानदार कम' इस के पक्षऔर विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

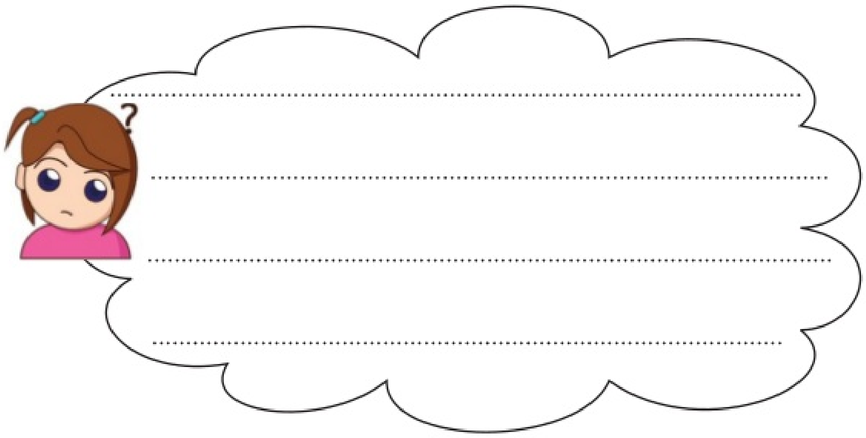

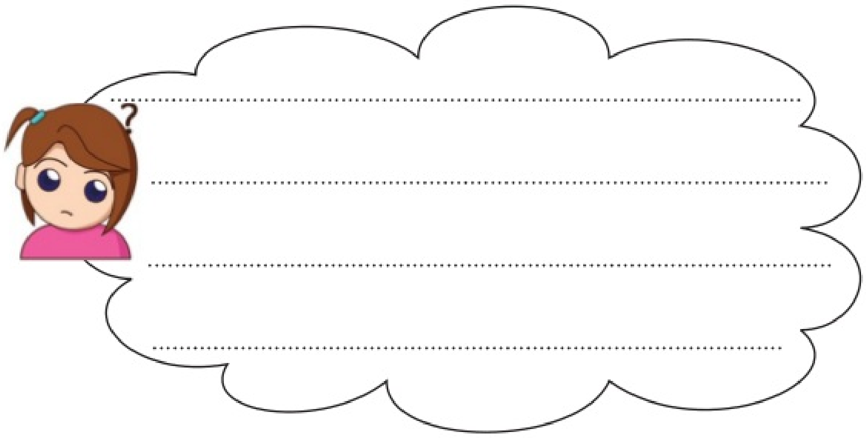

सोचें व लिखें-

10. मेरे सपनों की दुनिया ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

11. मेरे सपनों का भारत ....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

12. पाठ से संज्ञा शब्द छांटकर लिखिए।

13. बच्चो, आपको द्वन्द्व समास याद है न! जिसमें दो शब्दों के बीच 'और' छुपा होता है, जैसे -: दाल-रोटी - दाल औररोटी।

पाठ में से छाँटकर कुछ ऐसे शब्द लिखिए जो द्वन्द्व-समास के उदाहरण हैं।

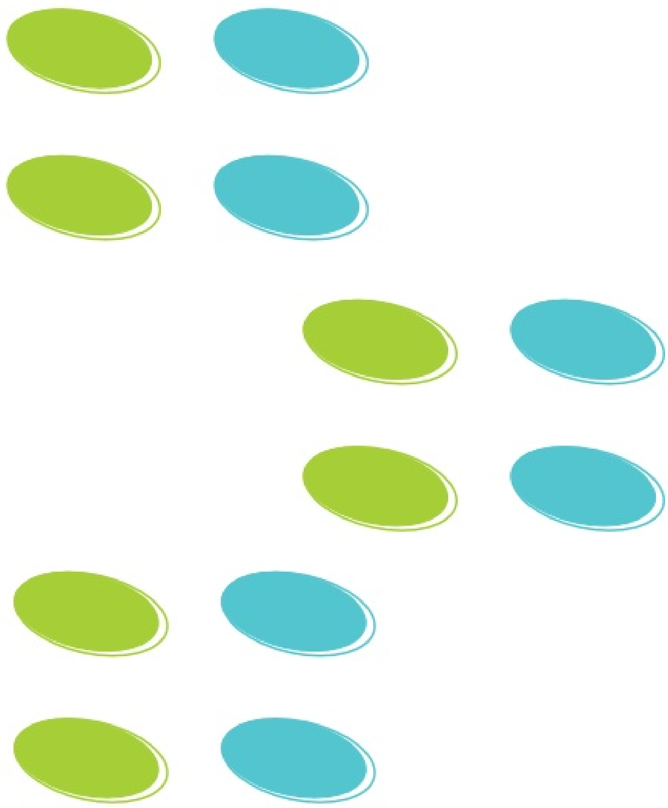

14. हम शब्द हैं। हमारे अर्थ हमसे जिसे धार्म छूट कहीं खो गये हैं। क्या आप हमारे अर्थों को हमारे साथ रख सकते हो?

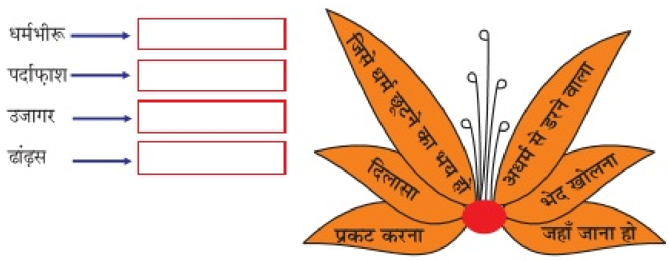

15. क्या आप ऐसे शब्द लिखकर दोनों गेंदों को भर सकते समानार्थी विपरीत (विलोम) शब्द हो?

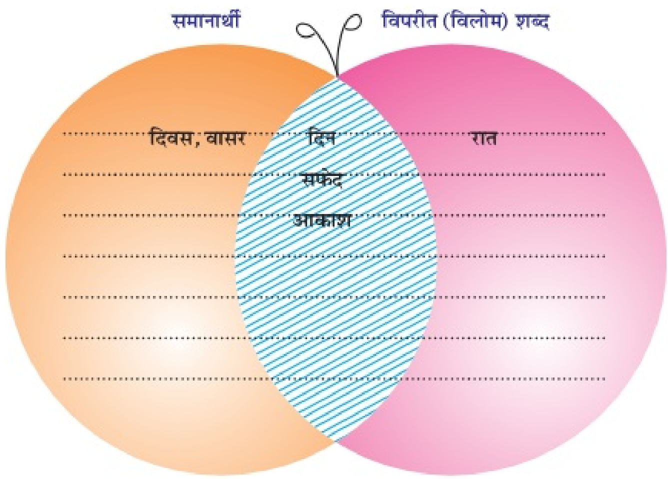

16. वाक्यों को पढ़कर सही (उचित) विराम चिह्न लगाइए।

(i) क्या निराश हुआ जाए

(ii) मेरे मन निराश होने की ज़रूरत नहीं है

(iii) पंडित जी बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया

(iv) कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई

9

कबीर की साखियाँ

कबीर दास जी पन्द्रहवीं सदी के एक महान सन्त कवि थे। अब आप सोचोगें 'भला 15वीं सदी के सन्त कवि को हम आज के आधुनिक युग में क्यों पढ़ें! पर दोस्तों, यकीन मानिए, कबीर दास जी जितनेउस समय प्रासंगिक थे; उतने ही आज भी प्रासंगिक हैं। कहने कोतो आज हम एक आधुनिक ज़माने का हिस्सा हैं, लेकिन आज भी हममें से अधिकतर लोग जात-पात, भाषा, क्षेत्र, धार्म और सम्प्रदायको ही अपनी असली पहचान मानने की भूल करते हैं। इतना ही नहीं, हम सभी मनुष्य हैं, एक ही प्रकृति की सन्तान हैं, यह भूलकर एक-दूसरे से जाति, धार्म, भाषा आदि के नाम पर नफरत करते हैं। कबीरदास जी ने इन्हीं बातों का तो विरोधा किया था। वे धाार्मिक आडम्बरों और दिखावों के घोर विरोधाी थे। उन्होंने ज़ोरदार शब्दों में सदैव यह स्थापित करने का प्रयत्न किया था कि हर एक मनुष्य समान है। किसी भी कुल, जाति या धार्म विशेष का होने मात्र से कोई भी श्रेष्ठ नहीं बन जाता, बल्कि मनुष्य अपनी श्रेष्ठता मात्र अपने अच्छे कर्मों से ही सिद्ध कर सकता है।

एक और कबीर ने अपनी रचनाओं में सभी प्रान्तों की भाषाओ का प्रयो किया है इसी कारन उनकी भाषा को पंचमेल खिचड़ी भाषा और सधुक्कड़ी भाषा भी कहते है आप कबीर को पकर उनकी भाषा की विशेषताओं को पहचान पाएंगे।

1.पता लगाइए- कबीर दास के दोहों को 'साखी' क्यों कहते हैं?

....

....

....

....
....

....
....

2 .नीचे दी गई साखियों को पूरा कीजिए-

(i) माला तो कर .... ।
.... ।।

(ii) जग में बैरी .... ।
.... ।।

(iii) .... उलटत होइ अनेक।
.... ।।

iv) कबीर घास .... ।
.... ।।

(v) .... ।
....पड़ा रहन दो म्यान।।

3. रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

जहाँ काम आवे सूई, कहा करे तरवारि।।

यह दोहा रहीम दास जी ने लिखा है।

क्या आप कबीर दास जी की उस साखी को लिख सकते हैं, जिसमें इसीभाव की अभिव्यक्ति हुई है?

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

4. मैं एक तिनका हूँ। अधिकतर लोग मुझे कोई महत्त्व नहीं देतेलेकिन समय आने पर मैं किसी की जान भी बचा सकता हूँ। ‘डूबते

को तिनके का सहारा' यह मुहावरा तो आप जानते ही होंगे। आप मेरे विषय में क्या सोचते हैं? मुझे एक पत्र लिखकर बताएं।

....

....

....

प्रिय तिनके,

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

5.

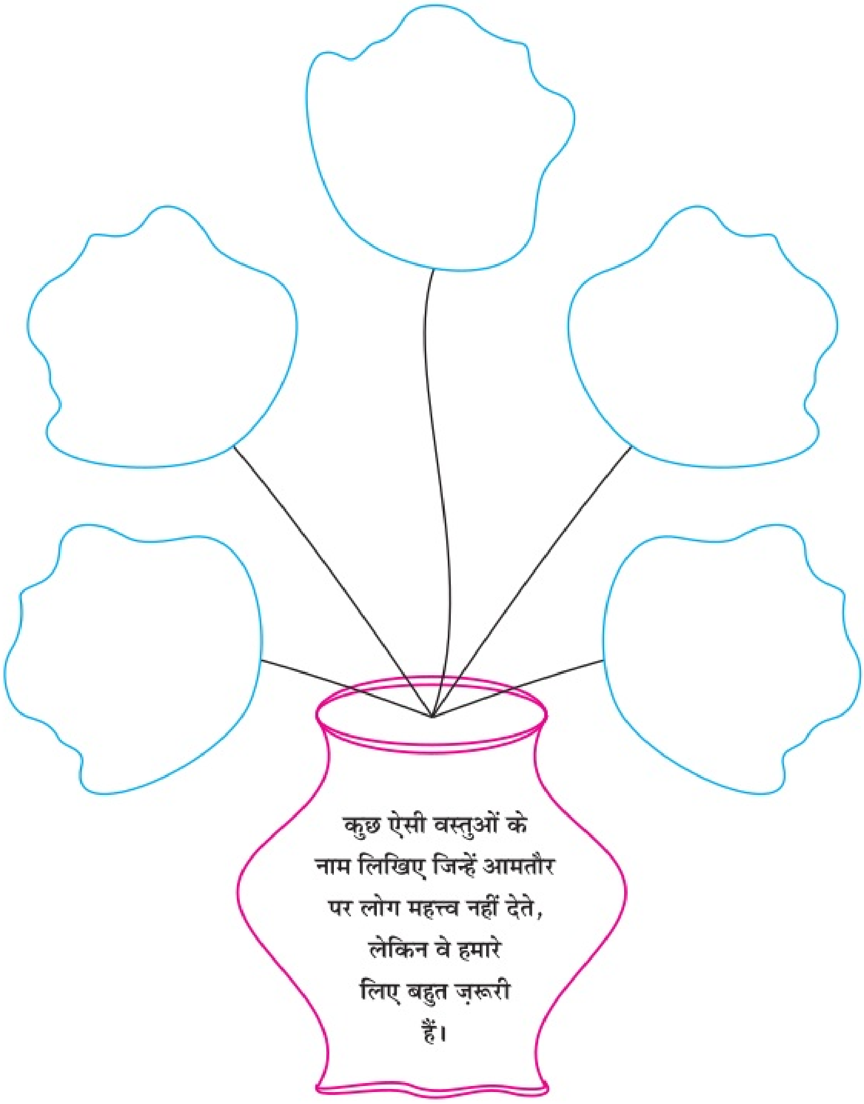

6. इन शब्दों को उनके सही अर्थ के साथ मिलाकर लिखिए।

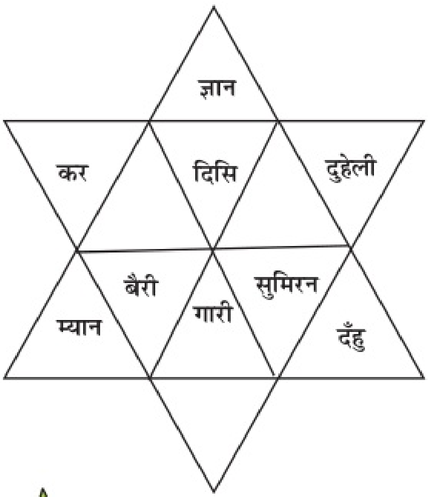
ज्ञान
कर
दिसि
दुहेली
बैरी
सुमिरन
म्यान
गारी
दहुँ

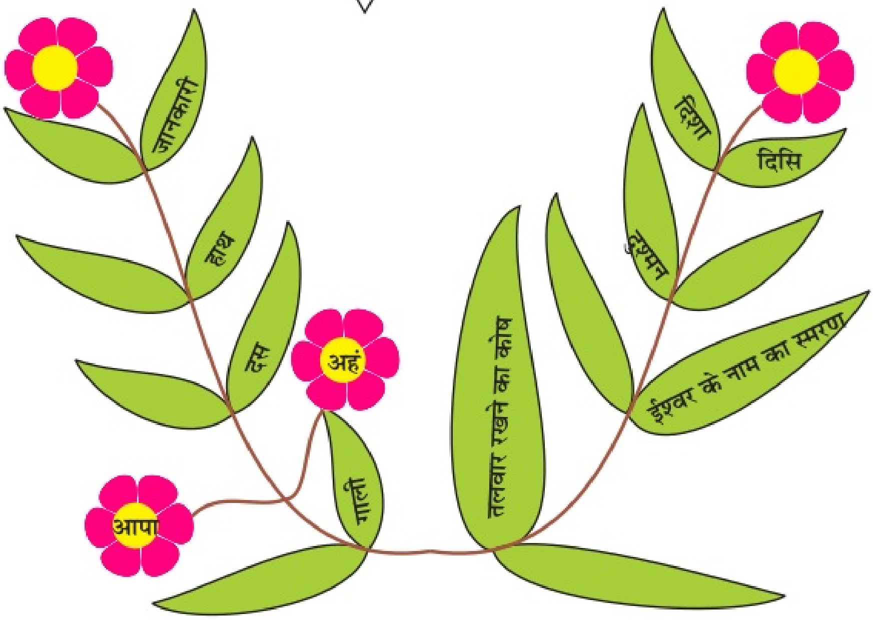
जानकारी
हाथ
दस
अहं
गाली
आपा
तलवार रखने का कोष
दिशा
दिसि
दुश्मन
ईश्वर के नाम का स्मरण

7.

7.

कल्पना कीजिए, आप एक लाठी हैं। कई लोग आपका उपयोग अच्छे कार्यों के लिए करते हैं। जबकि कई लोग आपसे अनुचित काम करवाते होंगे। ऐसे में आप कैसा महसूस करते हैं? डायरी के दो पन्ने लिखकर बताइए।

8. दी गई साखियों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव दिखाई देता है जिस कारण उनके उच्चारण व वर्तनी में अंतर आ जाता है। ऐसे शब्द **देशज शब्द** कहलाते हैं। दिए गए शब्दों को उनके प्रचलित/हिन्दी रूप से मिलाइए।

बानि	
दिसि	
दुहेली	
तरवार	
बैरी	
औखि	
सीतल	
जीभि	
पाऊँ	
तलि	

9. कबीर जी भक्त कवि होने के साथ-साथ समाज-सुधारक भी थे, उन्होंने समाज की बुराइयों के खिलाफ़ आवाज़ उठाई और लोगों को ज्ञान देकर उनके अज्ञान रूपी अंधाकार को दूर करने का प्रयत्न किया। वर्तमान समय में भी अनेक लोग समाज के लिए कार्य कर रहे हैं। क्या आप भी किसी ऐसे व्यक्ति को/के बारे में जानते हैं? ऐसे व्यक्ति का परिचय व उसके कार्य के बारे में लिखिए।

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

....
....

10. कबीर ने साखियाँ लिखते समय देशज शब्दों का प्रयोग किया है। आप पुस्तक के अन्य पाठों में से देशज (क्षेत्रीय बोली) शब्दोंको खोजकर लिखिए साथ ही उनके प्रचलित हिन्दी रूप भीलिखिए।

देशज शब्द	मानक रूप (प्रचलित रूप)
मुलुक	मुल्क
खमा	क्षमा
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

11. समानार्थी शब्द

किसी शब्द के मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द को समानार्थी शब्द कहते हैं। दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के स्थान पर समानार्थी शब्द इस प्रकार लिखिए कि वाक्य का अर्थ न बदले।

1. जग में कोई <u>बैरी</u> नहीं होता है।

जग में कोई शत्रु नहीं होता है।

ऊपर दिए गए उदाहरण को धयान से पढ़िए और समझिए -

1) माला <u>हाथ</u> में फिरती है।

....
....

2) हम सबने मिलकर <u>तय</u> किया कि सब बाहर घूमने चलेंगे।

....
....

3) मैंने अपने भाई को <u>चिट्ठी</u> लिखी थी।

....
....

4) थोड़ा काम<u>शेष</u> रह गया है।

....
....

5) आसमान में <u>बादल</u> छा गए हैं।

....
....

12. वचन बदलो

वचन बदलते समय धयान रखना चाहिए कि जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अंतमें “ा” की मात्र होती है, उनका बहुवचन रूप बनाते समय उस शब्दमें ए तथा ‘ ँ ’ लगता है। जैसे -

एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाएँ

इसी प्रकार दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए :-

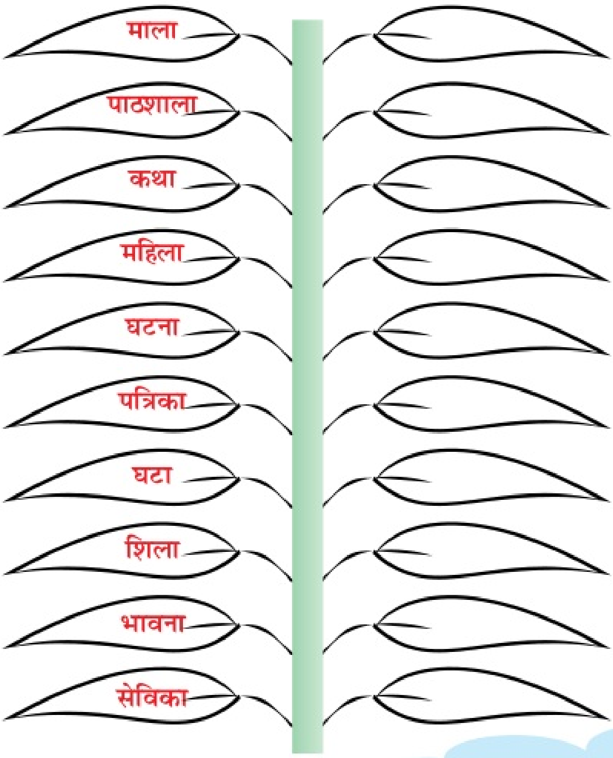

बूझो तो जानें-

तीन पैरों वाली तितली,
सज संवर कर कड़ाही से निकली।